लोक हितार्थ सत्यनिष्ठा

लेखा संगम

द्वादश अंक - 2019



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

"लेखासंगम" एकादश अंक का विमोचन करते अधिकारीगण



केवल विभागीय वितरण के लिए

लोक हितार्थ सत्यनिष्ठा

हिन्दी पत्रिका

लेखा संगम

द्वादश अंक-2019

जुलाई 2018 से दिसम्बर 2018

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

(१) सुश्री एस० आह्लादिनि पंडा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

(२) सुश्री मोनिका वर्मा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

परामर्शदाता

(१) श्री पंकज वर्मा
उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

(२) श्री कुमार चंद्रेश
उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

संपादक

श्री राजन प्रसाद
वरिष्ठ लेखाधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

सह-संपादक

श्री सुधीर कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

श्री देवमणि मिश्र
वरिष्ठ लेखाधिकारी
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

सहायक संपादक

श्री अजय कुमार
सहायक लेखाधिकारी/हिन्दी
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

श्री जितेंद्र कुमार सैनी
सहायक लेखाधिकारी/हिन्दी
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

सहयोग

अमीन अली
कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : निःशुल्क (राजभाषा हिन्दी को समर्पित)
(नोट : लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)
मुख पृष्ठ : कुम्भ 2019 में स्थित महालेखाकार का शिविर कार्यालय
अंतिम पृष्ठ : संगम तट का दृश्य

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	रचना का नाम	रचनाकार श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	नारी अस्तित्व	अनूप कुमार टण्डन	13
2.	सुखी जीवन का रहस्य	राजेन्द्र कुमार खरे	15
3.	स्मरण:नीरज/जब चले जायेंगे लौट के हम सावन की तरह	यश मालवीय	16
4.	लखनवी इश्क़	शशांक त्रिवेदी	19
5.	ईश्वर मेरी नजर से	भूपेंद्र सिंह नेगी	25
6.	अच्छा पड़ोसी	थंकाचन एम०डी०	28
7.	अनजाने कर्म का फल	सतीश राय	30
8.	पत्नी के विश्वास में बंदर ने डाला खलल	पी०पी०शर्मा	33
9.	हँसता बूढ़ा	विकास जायसवाल	37
10.	लोकतन्त्र,मानव अस्तित्व और चुनौतियाँ	कल्याण सिंह	40
11.	कुम्भ मेला	प्रीति सिंह	44
12.	साथ रहे पर समझ ना पाये	देवमणि मिश्र	49
13.	विदाई गीत	राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	51
14.	हो मंगलाचरण	प्रत्युष अवस्थी	52
15.	नेता बना दो	रवीन्द्र कुमार शर्मा	54
16.	गज़ल	राजीव सिंह “राही”	55
17.	गज़ल	सगीर अहमद सिद्दीकी	56
18.	वो बचपन की यादें	अजय वर्मा	58
19.	कहाँ गए वो दिन ?	राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	60
20.	जय हिन्दी जय हिंदुस्तान	प्रज्ञा	63
21.	संबंधों का अंकगणित	स्मृति श्रीवास्तव	65



संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय से अर्द्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के द्वादश अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारी पत्रिका राजभाषा के उन्नयन की दिशा में दोनों कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का एक सामूहिक प्रयास है। वास्तव में हमारी यह पत्रिका हिन्दी भाषा की विविध विधाओं का एक गुलदस्ता है। मैं सभी रचनाकारों को इस पत्रिका में उनके रचनात्मक योगदान के लिए तथा संपादक मण्डल को उनके अथक परिश्रम के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

हिन्दी भाषा सिर्फ संघ सरकार की राजभाषा ही नहीं अपितु सभी भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का एक सशक्त माध्यम भी है। राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। मुझे अपने कार्यालय के परिश्रमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों पर गर्व है जिनके सहयोग से हमारा कार्यालय हिन्दी में शत-प्रतिशत कार्य करने के लक्ष्य को लगभग प्राप्त कर चुका है।

आप सभी की सार्थक सहभागिता हेतु मैं एक बार पुनः हृदय से आभार प्रकट करती हूँ एवं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सब पत्रिका को समृद्ध बनाने एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने हेतु इसी प्रकार तत्पर रहेंगे।

एस. ए. पंडा

(एस० आह्लादिनि पंडा)

महालेखाकार (ले०एवं हक०)-प्रथम,

उ०प्र०, इलाहाबाद



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों के विचारों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करते हुए अपने द्वादश अंक में प्रवेश कर चुकी है। अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राजभाषा हिन्दी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। रचनाकारों ने अपनी कविताओं और लेखों के माध्यम से अपने मन के भावों और विचारों को बहुत ही सरल एवं रुचिकर ढंग से प्रस्तुत कर इस कर्तव्य को बखूबी निभाया है। इसके लिए मैं संपादकों एवं रचनाकारों का हृदय से धन्यवाद करती हूँ। पत्रिका के सफल सम्पादन पर संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

(मौनिका वर्मा)
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद



संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों.....

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की संयुक्त हिन्दी गृह पत्रिका 'लेखा संगम' के द्वादश अंक को आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक के प्रकाशन तक पहुँचने में हमें दोनों कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भरपूर सहयोग मिला और आशा है कि आगे भी यह सहयोग मिलता रहेगा।

भारत विविधताओं का देश है। यह विविधता भाषा में भी परिलक्षित होती है। हिन्दी एक संपर्क भाषा के रूप में विविधता में एकता को चरितार्थ करती है। संपर्क भाषा के रूप में विभिन्न राज्यों के बीच संचार सेतु बनकर, एक क्षेत्र के निवासी का दूसरे क्षेत्र के निवासियों के साथ संपर्क सूत्र का आधार है। राजकाज की भाषा के रूप में भी हिन्दी निरंतर अपनी सार्थकता प्रदर्शित कर रही है। चाहे संयुक्त राष्ट्र का मंच हो या कोई महासभा, हिन्दी भाषा ने राष्ट्र की हर प्रकार से सेवा की है।

हिन्दी भारतीय जनता के बीच संपर्क की सबसे शक्तिशाली भाषा है। अपनी सरलता के कारण यह धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन रही है। इलेक्ट्रानिक संचार माध्यम एवं कम्प्युटर आदि में भी हिन्दी ने अपनी पैठ बना ली है। सरकार द्वारा भी लगातार कम्प्युटर पर हिन्दी में कार्य करने के प्रशिक्षण आदि दिये जा रहे हैं। विभिन्न शब्दावली, नियमावली, आदेश, अनुदेश, परिपत्र इत्यादि समस्त दस्तावेजों के हिन्दी अनुवाद संस्करण उपलब्ध हैं। वास्तव में थोड़ी सी निष्ठा एवं सार्थक प्रयास से हम हिन्दी को शिखर पर पहुँचा सकते हैं।

आशा है कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रकाशित "लेखा संगम" का यह अंक भी पूर्व अंकों की भांति ही आपको पसंद आएगा। पत्रिका के बारे में आपके बहुमूल्य विचारों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद।

(राजन प्रसाद)
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश,
इलाहाबाद।

पाठकों के पत्र

आपके पत्रांक स०हि०अ०/लेखा संगम/दशम अंक/५८४९२ दिनांक १३.०९.२०१८ के साथ पत्रिका 'लेखा संगम' के दशम अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका की विषय-वस्तु ज्ञानवर्धक है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषतः श्री सतीश राय जी की "सबसे बड़ा धन:संतोष धन", श्री राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी की "भगवान का न्याय", श्री अजय कुमार जी की "स्वास्थ्य-प्राप्ति के सात्विक उपाय", श्रीमती नमिता चंद्रा जी की "हिन्दी की वेदना" एवं श्रीमती मधुबाला जी की "माँ" आदि रचनाएँ उल्लेखनीय,विचार प्रधान,प्रेरक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु संपादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पावती वरि० उपमहालेखाकार (प्रशासन) महोदय के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (सा०एवं सा०क्षे०ले०प०),
ओड़िशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के दशम अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएँ प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्री विकास जायसवाल का लेख "संकल्प से सफलता तक", श्री रमेश चन्द्र की कहानी "जनरेशन गैप", सुश्री प्रज्ञा का लेख "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" तथा सुश्री मधुबाला की कविता "माँ" प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

कल्याण अधिकारी/राजभाषा कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०),
राजस्थान, जयपुर

पाठकों के पत्र

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक- हि०अ०/लेखा संगम/दशम अंक/५८५१५ दिनांक १३.०९.२०१८ द्वारा हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के १०वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय एवं उत्कृष्ठ है। पत्रिका का स्वरूप लुभावना है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौन्दर्य भी आकर्षित करता है। श्री सतीश राय जी का लेख 'सबसे बड़ा धन:संतोष धन', श्रीमती आशा श्रीवास्तव की कविता 'चाहत', श्री विकास जायसवाल का लेख 'संकल्प से सफलता तक' आदि काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखाधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं ह०)
बिहार, पटना

आपके कार्यालय की पत्रिका 'लेखा संगम' का १०वां अंक हमें प्राप्त हुआ है। पत्रिका का आवरण अति सुंदर एवं मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ सुंदर, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। पत्रिका की साज सज्जा भी बहुत सुंदर है।

श्री यश मालवीय (होली की रंग भरी यादें), श्री सतीश राय (सबसे बढ़ा धन:संतोष धन), श्री राजेंद्र प्रसाद शुक्ल (भगवान का न्याय), प्रज्ञा (मन के हारे हार, मन के जीते जीत) की रचनाएँ उल्लेखनीय एवं उत्कृष्ठ हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंको के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी (रा०भा०अ०)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, डाक व दूरसंचार,
दिल्ली

पाठकों के पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के दशम अंक (जुलाई २०१७-दिसंबर २०१७) की एक प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र बहुत मनमोहक है साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबन्धित छायाचित्र काफी अच्छी लगीं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री यश मालवीय (होली की रंगभरी यादें), श्री विकास जायसवाल (संकल्प से सफलता तक), श्रीमती प्रीति सिंह (वृद्धावस्था), श्री राजेंद्र प्रसाद शुक्ल (भगवान का न्याय), श्रीमती प्रज्ञा (मन के हारे हार है, मन के जीते जीत है), डॉ० नमिता चंद्रा (हिन्दी की वेदना) एवं श्री अर्जुन पाठक (क्योंकि गलत मै था) की रचनाएँ अत्यंत ही सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं संकलन हेतु संपादन मण्डल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी/प्रशा० हिन्दी सेल
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक,शिक्षाप्रद व प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ-साथ उसकी साज-सज्जा अर्थात कलेवर,कागज,मुद्रण और उसमें अंतर्निहित फोटो सराहनीय हैं। पत्रिका में समाहित रचनाएँ, विशेषकर-"होली की रंगभरी यादें", सबसे बड़ा धन:संतोष धन", "भगवान का न्याय", :जनरेशन गैप", स्वास्थ्य-प्राप्ति के सात्विक उपाय", "माँ", "हम सबकी एक गुड़िया", "क्योंकि गलत मै था", बहुत रोचक हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखंड, देहारादून

द्वादश अंक-2019

गद्य संगम

लेखा संगम - 2019



''नारी अस्तित्व''

'अनूप कुमार टण्डन'

''कष्ट सहना जिसका है जीवन
त्याग करना जिसका धर्म,
सबकी सेवा ही जिम्मेदारी है,
क्या उसी का नाम नारी है,,

वह जमाना और था जब नारी को देवी के रूप में पूजा जाता था, पुरूषों से अधिक उसका आदर होता था, लक्ष्मी का एक रूप समझा जाता था परन्तु आज, आज यह स्थिति पूर्ण रूपेण विपरीत दिखाई देती है। नारी को देवी मानना तो दूर आज उसके जन्म लेते ही परिवार वाले दुःखी हो जाते हैं। उसे आदर देने के बजाय बोझ समझ कर पालते हैं और जिसे बोझ समझा जाये वो लक्ष्मी तो नहीं हो सकती।

आज नारी का क्या अस्तित्व, क्या मर्यादा, क्या गौरव रह गया है उसका। जन्म लेते ही कष्टों की भागी हो जाती है। कष्टों का जो सिलसिला चलता है तो फिर मृत्यु तक जारी रहता है। नारी जीवन के कष्टों का अन्त कहाँ?

जन्म हुआ तो परिवार वालों को दुःखी कर दिया। अब किसी को उसकी वजह से दुःख हो तो उससे बड़ा क्या कष्ट है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था में पदार्पण किया तो परिवार वालों ने मन की उन कोमल भावनाओं रूपी कलियों पर जो अभी प्रस्फुटित भी नहीं हो पाई है अंकुश लगा दिया जाता है तब उस कोमल मन को कितना कष्ट पहुँचता है ये कोई अन्य क्या जाने। उस वक्त तो यह अहसास होता है जैसे किसी कली के खिलकर मधुवन को देखने से पहले ही किसी ने उसे बड़ी निर्दयता से मसल कर फेंक दिया हो पर यही अन्त नहीं है। अभी तो अनगिनत कष्टों को सहना है।

किशोरावस्था से युवावस्था में आते ही हिदायतें मिलना शुरू '' अरे माँ से काम सीख ले कल को अपने घर

जायेगी तो काम आयेगा '' मानो यह अहसास दिलाया जा रहा हो कि अब ये आँगन तुम्हारा नहीं तुम तो परायी हो। मूल रूप से कोई काम बिगड़ गया तो तुरन्त आवाज आयेगी, ''पराये घर जाकर हमारी नाक कटवा देगी।'' अच्छे कामों की शाबासी तो मिली नहीं एक दिन काम बिगड़ते ही नाक को चोट पहले पहुँच गई। ये परायापन देखकर कितना कष्ट होता, पराया कहते–कहते एक दिन सच में पराया कर दिया जाता है, तब उन घर वालों से बिछड़ जाने का कष्ट जिन्होंने शायद ही कभी एक बोझ से ज्यादा समझा हो।

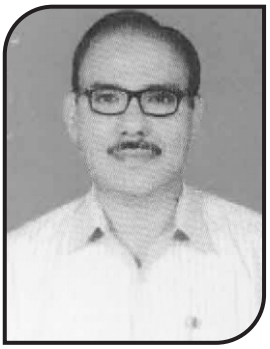
शादी हो गई। बेटी से बहू बन गई। अब नारी का एक नया रूप सामने आता है सास के रूप में। बाप रे, नारी इतनी कठोर भी हो सकती है। इस रूप की तो पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी। देने–लेने के विषय में तो सब मेरा है परन्तु घर–गृहस्थी सँभालने में '' बहू–अब तो यह तेरी घर गृहस्थी है'' तुझे ही सब सँभालना है, मै तो बहुत काम कर चुकी''। बहू को चाहे कितने कष्ट हो पर अब तो सारी जिम्मेदारियाँ उसी को निभानी है कैसे भी मर कर या जी कर। कुछ समय बीता संतान हुई। कहीं सन्तान उसी का स्वरूप हुई तो फिर झेलो घर वालों के तानों का कष्ट। ''हाय रे, हमारा तो भाग्य ही खराब है एक और बोझ घर आ गया।'' एक नारी को इस तरह अर्न्तनाद कर देखना कुछ उचित नहीं लगता अगर वो खुद न इस दुनिया में आती तो सृष्टि कहाँ पूर्ण होती।

बेटी बड़ी हुई उसकी शिक्षा और शादी की चिन्ता का कष्ट उसे विदा करने का कष्ट। अगर बेटा हुआ तो वही बेटा जिसके बीमार पड़ने पर रात–रात जागकर कष्ट झेला उसी बेटे से घर में नारी का एक और रूप बहू आ जाने पर बेटा दूर हो जाने के भय से मानसिक कष्ट।

कष्ट झेलते–झेलते वृद्धावस्था आयी तो भगवान ने भी कोई न कोई शारीरिक कष्ट दे दिया। ता–उम्र कष्ट झेलते–झेलते एक दिन कष्टों से मुक्ति मिली तो परिवार वालों को अन्तिम संस्कार करने का कष्ट दे दिया।

जन्म से लेकर मृत्यु तक मिलने वाले इन कष्टों का अन्त कहाँ? शायद ही कभी नारी जीवन के इन अनगिनत कष्टो का अन्त हो तो बस एक 'यक्ष' प्रश्न है जो सम्भवतः प्रलय काल तक बना रहेगा। महान कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की ये पंक्तियाँ जेहन में गूँजती हैः–

''अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी''– – –



''सुखी जीवन का रहस्य''

'राजेन्द्र कुमार खरे''

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि मनुष्य को अपने कर्म निष्काम भाव से करना चाहिए, जिससे आत्मिक सुख एवं शान्ति प्राप्त होती है। हमारे समस्त धर्म ग्रन्थों की भी यही शिक्षायें हैं। सभी कार्य सेवाभाव से करने चाहिए।

शाश्वत नियम जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। भगवत गीता में लिखा है कि बिना कर्म के किसी ने सिद्धि नहीं पायी है। कर्म बन्धन है। हर व्यक्ति इच्छा, अनिच्छा से कार्य करता है। शारीरिक एवं मानसिक चेष्टायें सभी कर्म हैं। मनुष्य कर्म करते हुए बन्धनमुक्त कैसे हो सकता है। सफल एवं सुखी जीवन के लिए त्याग, तपस्या एवं धैर्य की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति को संकल्प लेना चाहिए कि वह जो भी कार्य करे पूर्ण निष्ठा एवं लगन से करे उसको सुखद परिणाम मिलेगा।

मुझे राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की यह कविता याद आ रही हैः–

कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रह कर कुछ नाम करो ।।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो।
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो।।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को।
नर हो न निराश करो मन को।।



''स्मरण : नीरज/जब चले जायेंगे
हम लौट के सावन की तरह''



'यश मालवीय'

कविवर बच्चन के बाद नीरज जी ने मंचों पर गीत की पताका संभाल ली थी। उन्होने मंचों पर कविता को जिन्दा रखा। बेसुरे कविता समय को भी सुरीला बनाते रहे। वह गीत ऋषि जैसे लगते थे। सिनेमा और साहित्य के रिश्ते को नये सिरे से परिभाषित किया। इन दिनों मंचों पर आयी गिरावट से बहुत व्यथित और चिंतित हुआ करते थे। एक बार की बात है। एक कवि ने मंच से ही कोई सस्ता सा लतीफा हास्य कविता के नाम पर पढ़ दिया। कविता सुन कर नीरज जी तमतमा उठे थे और उसे फटकार लगाते हुए मंच से नीचे उतार दिया। एक सन्दर्भ भुलाये नहीं भूलता। प्रयाग संगीत समिति में एक कवि सम्मेलन था। सम्भवतः वह यात्रिक होटेल में रूके थे। तब मोबाइल वगैरह का जमाना नहीं था। उनकी सधी हुई राइटिंग में एक पोस्ट कार्ड मिला था। इलाहाबाद आ रहा हूँ। तीन जरूरी काम हैं। संगम स्नान करूँगा, आनन्द भवन चलूँगा और दीदी महादेवी के पाँव छूकर आशीर्वाद लेने उनके घर चलूँगा। मैं अपना प्रिया स्कूटर लेकर होटेल पहुँच गया था। मन में सन्तोष था। मैंने नीरज जी से कहा कि मेरे पास फोर व्हीलर नहीं है। यह सुन कर नीरज जी बेलौस होकर बोल उठे थे,

'महादेवी जी कविता की देवी हैं। वहाँ तो मुझे नंगे पैर, पैदल ही चलना चाहिए।'

मैं दोपहर में उन्हे अपने स्कूटर की पिछली सीट पर बैठा कर उनके अशोक नगर स्थित आवास पर ले कर गया। महादेवी जी उस समय आराम कर रही थीं। भनक लगने पर कि नीरज जी आये हैं वह आँख मलते हुए बाहर के कमरे में आ गयीं। नीरज जी ने शिशुवत उनके पाँव छुए। महादेवी जी ने आशीष देते हुए कहा, 'आप आये बहुत अच्छा लगा।' नीरज जी यह सुनकर अभिभूत होते हुए बोल उठे थे, 'कविता के तीर्थ के पास भला मैं क्यों नहीं आता। गंगा

यमुना के संगम पर लुप्त हुई सरस्वती, आप ही तो हैं।'

नीरज जी के न रहने पर कविता के एक युग का जैसे अन्त हो गया है। पाठ्यक्रम में पहली बार 'जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाये' पढ़ी थी। भरे सावन में उनके जाने पर उन्ही की पंक्तियाँ याद आ रही हैं–

जब चले जायेंगे हम लौट के सावन की तरह,
याद आयेंगे प्रथम प्यार के चुम्बन की तरह,
मेरे घर कोई खुशी आती तो कैसे आती,
उम्र भर साथ रहा दर्द महाजन की तरह।

एक और प्रसंग याद आता है। वाराणसी का यू0पी0 कॉलेज का मंच था। नीरज जी कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे। वह मेरे जीवन का अपने शहर इलाहाबाद से बाहर का पहला कवि सम्मेलन था। बनारस में कवियों की हूटिंग का सर्वथा मौलिक तरीका हुआ करता है। श्रोता समुदाय लाल, हरी, नीली पन्नी और साथ में टॉर्च लेकर आता है। आयोजकों ने पहले ही बता दिया था कि चेहरे पर लाल रोशनी पड़ने लगे तो अपना कविता पाठ स्थगित कर तुरंत बैठ जाइयेगा, पेमेन्ट जो तय हुआ है वह आयोजन की समाप्ति पर आपको दे दिया जायेगा। नीली या पीली रोशनी पड़े तो आप एक पूरी रचना पढ़ सकते हैं। हरी रोशनी चेहरे पर पड़े तो आप देर तक कवितायें मजे में पढ़ सकते हैं। मैं जूनियर मोस्ट था। मेरे कविता पाठ की बारी शुरू में ही आ गयी। अभी मैंने माइक पर आकर गीत का मुखड़ा पढ़ा भर ही था कि चेहरे पर लाल रोशनी पड़ने लगी। मेरे हाथ पाँव कांपने लगे, रुआँसा हो गया। पसीने–पसीने तो पहले ही हो चुका था। लग रहा था कि दोनों पैरों के घुटने निकल कर मंच पर ही गिर जायेंगे। मैं माइक छोड़ कर हटने ही वाला था कि नीरज जी किसी पेड़ की तरह आ कर मेरे बगल में खड़े हो गये और श्रोताओं को लगभग डांटते हुए बोले,

'आप वर्षों यश के पिता उमाकांत मालवीय को प्यार से सुनते रहे हैं। यह प्रतिभा अपनी उसी विरासत को लेकर मंच पर आयी है। आपकी इस हरकत से एक प्रतिभा असमय अकाल काल कवलित हो सकती है। अच्छा होगा कि आप

बाबा विश्वनाथ की नगरी का भभूत इसके माथे पर मल दें। आने वाले समय में हम भी देखेंगे और आप भी कि इस गीत कवि ने गीत विधा में कुछ सार्थक जोड़ कर अपनी धरोहर को प्रमाणित किया है।'

कहना न होगा कि नीरज जी के इस संक्षिप्त से संबोधन के बाद मेरे चेहरे पर हरी रोशनी पड़ने लगी। नीरज जी ने मुझसे 'पिता' पर लिखा अपना गीत पढ़ने को कहा। वह गीत मेरे लिए प्रार्थना गीत जैसे ही है। लोग खामोशी से सुनने लगे कि नीरज जी फिर माइक पर आ गये और बोले,

'इतना प्यारा गीत पढ़ा जा रहा है मगर क्या गीत ऐसे सुना जाता है, ऐसा लग रहा है जैसे कब्रिस्तान में अजान हो रही है। गीत अच्छा लग रहा हो तो एक नये कवि का हौसला बढ़ाइये।' नीरज जी का संकेत भर काफी था। उस दिन फिर एक के बाद एक गीत श्रोताओं ने झूम कर सुना। मैं नीरज जी का निर्व्याज स्नेह पाकर और पिता को याद करते हुए अन्तर तक भीग गया था।

आज नीरज जी के नेपथ्य में जाने के बाद वह सब कुछ बहुत याद आ रहा है। वह शेर कौंध रहा है–

रास्तों! कहाँ गये वो लोग जो आते–जाते,
मेरे आदाब पे कहते थे कि जीते रहिए।

लगता है वह आशीर्वाद ही कहीं खो गया है। नीरज जी अपने जीते जी ही एक मिथ बन गये थे। अब तक वह एक जीवित किंवदन्ती थे, अब गीतों की एक अमर कहानी हो गये हैं। वह वाचिक परम्परा की खुशबू की एक मशाल जैसे थे, जिसकी सुगन्ध युगों तक रहेगी। वह श्रोताओं से सीधा संवाद करते थे। वह एक नातमाम सफर पर निकल गये हैं। उन्ही की ग़ज़ल के चंद अशआर याद आ रहे हैं–

जितना कम सामान रहेगा
सफ़र उतना आसान रहेगा
जितना भारी होगा बक्सा
उतना तू हैरान रहेगा।



''लखनवी इश्क़''

'शशांक त्रिवेदी'

सन् 2007 में मुझे पढ़ने के लिए लखनऊ भेज दिया गया। अभी 12वीं क्लास ही उत्तीर्ण कर पाया था लेकिन पढ़ाई करते–करते ऊब चुका था। मेरी इच्छा पढ़ने की कतई न थी लेकिन पारिवारिक अपेक्षाओं के चलते किसी न किसी तरह से औपचारिकताएं निभा रहा था। ख़ैर, जब लखनऊ भेजा गया तो सोच लिया कि अब अच्छे से पढ़ाई करूँगा।

अलीगंज में एक कोचिंग ज्वाइन कर ली जहाँ उन दिनों प्रतियोगी परीक्षाओं की बढ़िया तैयारी कराई जाती थी। गणित के टीचर ने एक दिन $(x+a)^n$ का फार्मूला पूछा तो झट से खड़े होकर रटा रटाया सूत्र उगल दिया क्योंकि मैंने 12वीं क्लास में गणित ली थी।

ऐसा अक्सर होता है जब किसी प्रश्न का जवाब अकेले आपके ही पास हो तो लोग आपको विशिष्ट समझने लगते हैं। शिक्षक ने खूब उत्साहवर्धन किया। अगले ही क्षण मेरी शारीरिक भाषा बदल गयी और अभी कुछ देर पहले जहाँ खुद को एकदम अकेला महसूस कर रहा था वहीं अब लग रहा था कि यहाँ पर अपना भी थोड़ा बहुत वजूद है। एक घंटे की क्लास ख़त्म करके टीचर बाहर निकले और दूसरे टीचर के आने में अभी दस मिनट थे तो सब थोड़ा सुस्ताने लगे।

''मेरी मैथ्स थोड़ी वीक है... आप प्लीज थोड़ी सी हेल्प कर देंगे...???'' मखमली आवाज कानों में गूंजी तो मैने गर्दन दूसरी तरफ घुमाई। ये आवाज एक खूबसूरत लड़की की थी जो याचना की मुद्रा में मेरी ओर देख रही थी और मैं उसे देख कर मंत्रमुग्ध हुए जा रहा था।

''अरे बिल्कुल... क्यों नहीं....!!! कोई भी प्राब्लम हो तो मैं हेल्प कर दूंगा...'' मैंने मन ही मन खुश होते हुए कहा।

''वैसे नाम क्या है आपका...?''

''मैं ज़ोया... ज़ोया खान... और आप?''

मैनें अपना नाम बताया और इस तरह वो पहली मुलाकात मुकम्मल हुई।

————————————————

कोचिंग मैनेजमेंट की कम्प्यूटर लैब कोचिंग से दूर थी और मैं इतवार को टेस्ट देने वहाँ जाया करता था।

उस दिन भी मैं पहले की तरह पहुँचा और इत्तेफ़ाक से ज़ोया मुझे गेट पर ही मिल गयी। वो नीली आँखों वाली और लहजे में लखनवी नज़ाकत लिए एक बेहद सादगी भरी खूबसूरत लड़की थी। पहली नज़र में ही मैं उसे दिल दे बैठा था। मज़हबी बन्दिशों के चलते मैंने उससे इस बारे में बताना मुनासिब नहीं समझा लेकिन इश्क़ मज़हब देखकर थोड़े ही न होता है।

''अरे आप भी टेस्ट देने आते हैं...!'' उसने थोड़ा हैरान होते हुए पूछा...

'' 'आप भी' से क्या मतलब है... मैं तो हर इतवार को आता हूँ...'' मैनें नाराज से लहजे में कहा।

''मेरा मतलब था आज तक आप मुझे दिखे नहीं न इसलिए पूछ रही थी...''

''ओह, अच्छा...! वैसे मैं ज्यादातर सुबह वाले बैच में आता हूँ। आज पहली बार शाम को आया हूँ।''

''चलो फिर टेस्ट देते हैं।''

और फिर हम दोनों ने अपने कार्ड दिखाये और अन्दर चले गये।

दो घन्टे के बाद जब टेस्ट खत्म हुआ तब तक काफी अंधेरा हो चुका था। सर्दियों में सूरज जल्दी डूब जाता है। कोहरा भी थोड़ा–थोड़ा पड़ने लगा था।

मैनें उससे पूछा, ''आपका घर कहाँ है और कैसे जायेंगी?''

''वो दूसरी तरफ है, मैं चली जाऊँगी ऐसे ही... पैदल'' उसने कहा।

''अंधेरा काफी हो चुका है और आप अकेली कैसे चली जायेंगी...?''

''जैसे हर इतवार को चली जाती हूँ...''

''चलो मैं भी उसी रास्ते से चलता हूँ पर आपको ऐसे अकेले नहीं जाने दूंगा'' मैंने कहा।

''क्यों...? इतनी फिक्र किस लिए ज़नाब... कहीं..'' उसने छेड़ते हुए कहा। मैं थोड़ा सा हड़बड़ा गया और घबराहट छिपाते हुए बोला ''अरे नहीं नहीं... मैं तो ऐसे ही कह रहा था... आपको अकेले जाना है तो आराम से जाइए, नो प्राब्लम''

उसकी हँसी छूट गयी।

''अगर आपको कोई तकलीफ़ न हो तो चलिए मेरे साथ... ''

और मैं साइकिल को पैदल ही पकड़े उसके साथ बातें करते विश्वविद्यालय के पीछे से होते हुए गोमती के किनारे तक आ गया। बातों बातों में मैं उसके परिवार के बारे में पूछने लगा।

''मेरे अब्बू लखनवी चिकन कढ़ाई के पुराने कारीगर थे, बीमारी के कारण काम छोड़ दिया है हालांकि मैं और अम्मी घर पर ही कढ़ाई करती हैं जिससे गुजारा चल जाता है। बड़े भाई जान सऊदी अरब में हैं। वे भी पैसे भेजते रहते हैं।'' उसकी आवाज में एक अजीब सी उदासी थी।

एक पुराने जर्जर मकान के सामने इशारा करते हुए बताया कि उसका घर यही है। दीवारों से प्लास्टर छूट रहा था। ऊपरी मंजिल पर बने कमरे के बाहर लकड़ी के दरवाजे भी जर्जर हालत में थे। लेकिन ऐसा लग रहा था कि इसका अतीत काफी शानदार रहा होगा।

''ठीक है... अब आप जाओ और पहुँचकर मुझे मैसेज करना मत भूलना... फ़िक्र है हमें आपकी''

उसने अपनी गर्म उंगलियाँ ऊनी कार्डिगन से निकाल कर साइकिल की हैंडिल को थामे और शीत में डूबे मेरे हाथ को मजबूती से पकड़ते हुए कहा। मेरा दिल हुआ कि वो मेरा हाथ यूँ ही मजबूती से हमेशा के लिए थामे रहे... ता उम्र.

————————————————

अब मैं शाम को इरादतन वहीं गोमती के किनारे घूमने चला जाता था। मेरी मकान मालकिन ने एक बार मुझे हिदायत दी कि पुराने लखनऊ की तरफ मत जाया करो, वहाँ जादूगर और तांत्रिक लोग रहते हैं। एक दिन वहाँ मैंने एक दुकान से सिगरेट खरीदी और जला कर वहीं बेपरवाह खड़े होकर पीने लगा।

''सिगरेट पीने से कैंसर और दमा हो जाता है। प्लीज़ इसे फेंक दीजिए...'' चेहरे पर दुपट्टा बांधे एक लड़की मेरी ओर देख कर कह रही थी। मुझे लगा शायद किसी और से कह रही थी।

''मैं आप ही से मुख़ातिब हूँ जनाब...'' उसने कहा।

मैंने धुँआ छोड़ते हुए कहा, 'आपसे मतलब..?'

उसने चेहरे से दुपट्टा हटाया और मैं मानों बेहोश होते होते बचा।

सामने ज़ोया थी।

''ज़... ज़ोया, मैं वो बस ऐसे ही कभी कभार पी लेता हूँ।'' मैंने झट से सिगरेट पैरों तले मसल दी।

''वैसे तुम यहाँ कैसे?''

''ऐसे ही, घूमने आ जाता हूँ कभी कभी..''

''कभी–कभी या रोजाना आते हो..''

मेरी चोरी पकड़ी गयी। मैंने कहा कि पिछले कई दिन से लगातार आ रहा हूँ।

''अच्छा, आओ उधर घूमने चलें!' मैनें ज़ोया से कहा।

हम दोनों नदी के किनारे सड़क पर चल रहे थे।

अचानक उसने मुँह ढक लिया और दूसरी तरफ देखने लगी।

''क्या हुआ ज़ोया..'' मैंने परेशान होते हुए पूछा,

''अरे बुद्धू, वो आदमी अब्बू का जानने वाला है... अगर उसने बोल दिया कि मैं तुम्हारे साथ घूम रही हूँ तो मेरा बाहर निकलना भी बन्द हो जायेगा'' उसने कहा।

एक दुकान से उसने अमूल का पैकेट बन्द दूध खरीदा और फिर घर जाने को हुई।

''ज़ोया...'' वो मुश्किल से कुछ मीटर दूर चली तो मैंने आवाज दी।

''क्या हुआ...?''

''मुझे कुछ कहना है...''

''जल्दी बोलो...''

''मुझे तुमसे प्यार हो गया है...सच में...'' आखिर मैंने उसे बोल ही दिया।

वो बच्चों की तरह खिलखिलाती हुई पुराने लखनऊ की उन तंग पाईपनुमा गलियों में विलीन हो गयी। घर पहुँच कर रात में उसका फोन आया। उसकी कुबूलियत का पता तो मुझे तुरंत ही लग गया था लेकिन उससे बात करके मुझे वाकई सुकून मिला।

————————————————

मैं उससे सच्चे दिल से बेहद मोहब्बत करता था। कोचिंग बंक करके उसके साथ कभी अमीनाबाद कभी हजरतगंज घूमता रहता। उसने मेरे लिए अपना पसंदीदा नॉनवेज खाना तक छोड़ दिया था।

एक रात लगभग एक बजे उसका फोन आया।

''क्या ज़ोया... ये कोई टाइम है फोन करने का...'' मैनें नींद में ही कहा।

उसकी आवाज सुनकर मुझे लगा वो बहुत डरी हुई और परेशान थी।

उसके बड़े भाई सऊदी से लौट आये थे और अपने वापिस जाने तक उसकी शादी करना चाहते थे।

''मुझे ले चलो यहाँ से... मर जाऊँगी मैं तुम्हारे बगैर...'' वो रोये जा रही थी और मैं अपने आँसुओं में डूबा उसे चुप करा रहा था।

उसका कोचिंग जाना बन्द करा दिया गया। एक सहेली से मिलने के बहाने वो मुझे आखिरी बार उसी सुनसान गली में मिली जहाँ पहली बार मैनें उससे अपनी मोहब्बत का इज़हार किया था। ज़ोया ने आखिरी बार मुझसे गले लग

कर 'खुदा हाफ़िज़' कहा। फिर जब वो मुझसे रूख़सत हो रही थी तब लगा जैसे मेरी जान ज़ोया के साथ ही निकल कर जा रही हो।

मैं कायर था। मुझमें हिम्मत नहीं थी कि एक गैर मजहब की लड़की से शादी करके खोखले समाज के खिलाफ़ चला जाता। ज़ोया में हालांकि वो कूव्वत थी मगर मुझमें ही समाज की बेड़ियों को तोड़ने का हौसला न था और फिर मेरा साथ देने वाला भी कोई न था।

ज़ोया का निकाह हो गया और मैं लखनऊ छोड़कर घर चला आया।

————————————

एक रोज लखनऊ से मेरे पास फोन आया कि ज़ोया अपनी ज़िन्दगी के आखिरी लम्हों से गुजर रही है। अजीब बीमारी हो गयी थी उसे, शरीर में रक्त बनना बन्द हो गया और शरीर पीला पड़ गया है। इलाज करवाया लेकिन उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है और मरने से पहले आखिरी बार वो मुझे देखना चाहती थी। मैं अगले दिन लखनऊ पहुँचा तब तक देर हो चुकी थी। ज़ोया सुबह ही निकल चुकी थी... कभी न लौटने वाले सफ़र पर... और मैं अभागा उसकी आखिरी ख्वाहिश भी नहीं पूरी कर सका था।

सूरज ढल रहा था। लोग घर जा चुके थे। भावनाओं के अतिरेक में डूबा मैं ज़ोया की कब्र के पास बैठा फ़ातिहा पढ़ रहा था...



"ईश्वर–मेरी नजर से"

'भूपेन्द्र सिंह नेगी'

ईश्वर के बारे में सबकी अपनी–अपनी धारणायें हैं। मैंने भी एक धारणा बनाई है। जो आप लोगों से साझा कर रहा हूँ। जरूरी नहीं मैं आपकी धारणा से सहमत होऊँ, और न ही जरूरी है आप मेरी धारणा से सहमत हों। बस अपना नजरिया रख रहा हूँ– सहमत होना न होना आप पर है।

सही मायने में, मैं पहले ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता था। पर एक बार मैं अपनी सुध–बुध खो बैठा एवं घर से भाग गया। इसी स्थिति में शाम होने लगी, मन घबराने लगा–रात कैसे कटेगी, जाड़ो के दिन थे। अचानक कुछ अजीब सा लगा–एक आशा की किरण दिल में जागी, एवं जैसे खेतों के बीच से एक पंगडण्डी के रास्ते मुझे आगे चलने को दिल ने कहा। और मैं एक अकेली झोपड़ी में पहुँच गया। वहाँ पर दो बूढ़े–बुढ़िया एवं एक छोटी सी बच्ची थी। उन्होंने मुझे दो मोटी–मोटी रोटी एवं खाली रस एवं दो टुकड़े आलू के साथ दिया। वैसा स्वादिष्ट खाना मुझे न पहले कभी लगा था, न अभी तक कभी लगा। बाद में मेरे दिल ने गाईड किया एवं घर तक पहुँचा दिया। पर आठ–दस सालों तक बीच–बीच मैं अपनी सुध खो बैठता था एवं ऐसे ही कई अनुभवों से गुजरा हूँ। डाक्टर की दवाई चलती थी एवं ठीक हो जाता था। अब करीब दस सालों से सब ठीक चल रहा है।

तो इन स्थितियों से गुजरने पर मैं गहराई से सोचने लगा एवं ईश्वर के अस्तित्व के बारे में भी चिन्तन करने लगा। मेरा मन वैज्ञानिक तरीके से सोचने का आदी था, इसलिये इसी तरीको से चिन्तन करता था।

पहले अनुभव के आधार पर मैंने सोचा कि ईश्वर हमारे दिल में गहराई में एक आशा के किरण के रूप में मौजूद है। जब हमको अपने जीवन में चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा दिखता है तो यही आशा की किरण हमें ढाँढस बाँधता है एवं

मार्ग दर्शन करता है।

कहने का मतलब ये कि ऐसे ही सोचते हुये कई धारणाओं से गुजरते हुये मैं ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में वर्तमान धारणा पर आया हूँ, जिसे फिलहाल मैं अन्तिम एवं पूर्ण रूप से मानता हूँ।

कुछ अनुभवों के सम्बन्ध में संक्षेप में बताना चाहता हूँ कि ऐसे ही स्थितियाँ मैं एक–एक बार–चर्च में, नमाज में, गुरूद्वारा में एवं मंदिर में–अलग–अलग समयावधि में गया था एवं हर बार असीम शाँति का अनुभव किया। विचार करने पर इस नतीजे पर पहुँचा कि उस जगह का सामूहिक वातावरण मन में शांति देता है। वैसी मन स्थिति में वैसे फिर कभी इन जगहों पर नहीं गया, कुछ स्वाभिमान का मामला था।

ऐसे ही चिन्तन में एक बार सोचा कि ईश्वर का रूप कुछ ऐसा होना चाहिये उनके चेहरे पर–दयालुता, करूणा, एवं आपको समझने के भाव होने चाहिये। पहले सोचा किसी स्त्री के रूप में होगी पर मन नही माना। फिर सोचा किसी बूढ़े के रूप में होना चाहिये। जिनके चेहरे पर ये सब भाव हों एवं चेहरे पर सफेद दाढ़ी हो। ऐसे सोचते हुये गुरू–नानक जी का चेहरा सामने आ गया एवं मुझे लगा बिल्कुल ऐसा ही रूप होना चाहिये।

फिर भी चिन्तन करता रहा एवं कई धारणायें बनी, बिगड़ी–सुधार किया एवं वर्तमान धारणा पर पहुँचा, जो इस प्रकार है–

मेरी धारणा के अनुसार जब बिग–बैंग हुआ कई प्रकार के ऊर्जा का उत्सर्जन हुआ। ऐसे ही एक प्रकार की ऊर्जा धीरे–धीरे एक जगह घनीभूत रूप में एकत्रित हो गोलाकार रूप में ब्रह्माण्ड में कहीं पर स्थित हो गई। वहीं से फिर ऊर्जा, चारों तरफ निकलती हैं एवं उचित वातावरण पाने पर जीव–जन्तु का रूप धर लेती है। डार्विन थ्योरी के अनुसार इवोल्यूमान होते–होते पृथ्वी पर हम मनुष्य भी अस्तित्व में आ गये।

इस ऊर्जा का नाम मैंने कन्सर्स एनर्जी (चेतन ऊर्जा) नाम दिया। जार्ज बर्नाड शॉ के एक लेख में उन्होंने कहा था कि भविष्य का ईश्वर एक होगा–जिसे लाईफ–फोर्स कहा जायेगा। मेरी धारणानुसार मैं लाईफ–फोर्स को कन्सर्स एनर्जी सोच रहा हूँ।

नान–कान्सर्स एनर्जी से–प्लांट लाईफ चलती है। एवं कान्सर्स एनर्जी से –ऐनीमल लाईफ चलती है। यही मेरी धारणा है विश्वास नही भी करना है, तो भी इस सम्बन्ध में आगे तक कुछ सोचा जा सकता हैं। वैसे इस धारणा के आधार पर आत्मा, भूत–प्रेत एवं संतों, साधुओं की आलौकिक शक्तियाँ को भी समझाया जा सकता है।

जय माता दी।



''अच्छा पड़ोसी''

'थंकाचन एम0डी0'

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए हमारे जीवन में खुशियाँ और शान्ति लाने के लिए हमें ईश्वर को अपनी जिन्दगी में प्रमुख स्थान देने के साथ–साथ अपने पड़ोसियों के साथ भी करुणा, प्रेम एवं परस्पर सहायता का मनोभाव रखना चाहिए। हमारा पड़ोसी कौन है? क्या हमारे आसपास रहता है, वही हमारा पड़ोसी है? इस पर मनन चिन्तन करने के लिए पवित्र बाइबिल में यीशु की कही हुई एक छोटी सी कहानी है (लूक अ : 10 वा : 25–37)।

यीशु की लोकप्रियता देख कर उस समय के व्यवस्थापक लोगों को परेशानी होने लगी और उन्होने उनकी ज्ञान की परीक्षा लेनी चाही। उसमें से एक व्यवस्थापक उठा; और यह कह कर, उसकी परीक्षा लेने लगा; कि हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए मैं क्या करूँ? उसने उससे कहा; कि व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है? उसने उत्तर दिया कि तू प्रभू अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। उसने उससे कहा, तूने ठीक उत्तर दिया है, यही कर : तो तू जीवित रहेगा। परन्तु उसने अपनी तईं धार्मिक ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो मेरा पड़ोसी कौन है?

यीशु ने उत्तर दिया; कि एक मनुष्य येरूशलम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेर कर उसके कपड़े उतार लिए, और मारपीट कर उसे अधमरा छोड़ कर चले गये। और ऐसा हुआ; कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था परन्तु उसे देख के कतरा कर चला गया। इसी रीति से एक लेवी उस जगह पर आया, वह भी उसे देख के कतरा कर चला गया। परन्तु एक सामरी यात्री वहाँ आ निकला, और उसे देख कर तरस खाया। और उसके पास आकर और उसके

घावों पर तेल और दाखरस डाल कर पट्टियाँ बांधी, और अपनी सवारी पर चढ़ा कर सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की। दूसरे दिन उसने दो दिनार निकाल कर भटियारे को दिये और कहा; इसकी सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा।

अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा? उसने कहा, वही जिसने उस पर तरस खाया यीशु ने उससे कहा, जा, तू भी ऐसा ही कर।।

इस कहानी के माध्यम से यीशु ने संकेत दिया है कि एक सामरी यात्री जो उनके लिए अनजान था और दूसरे देश का था तब भी उस पीड़ित व्यक्ति के लिए अपना करूणा और प्रेम दिखाया। इस तरह वह एक अच्छा पड़ोसी बन गया।

हमारे जीवन में भी हमें जरूरतमंद एवं असहाय लोगों की मदद करनी चाहिए ताकि हम भी एक अच्छे पड़ोसी बन सकें। जो कार्य हम करेंगे जिस पर हमें किसी भी तरह का प्रतिफल की इच्छा नहीं होनी चाहिए। इस कार्यालय में कार्य करते हुए भी हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि हमारे निष्ठापूर्व कार्य से अनेक अभिदाताओं की मदद कर सकते हैं जो हो सकता है कि आर्थिक रूप से परेशानी में हों।

हम सब एक अच्छे पड़ोसी बनें और अपना जीवन सफल बनायें।



"अनजाने कर्म का फल"

'सतीश राय'

शरीर को स्वस्थ रखने में हमारे विचारों, भावों का बहुत महत्व है। हम अपने मन में जैसा विचार लाते हैं वैसा ही हमारा शरीर बनता है। यदि हम बचपन से ही अपने को क्रूर दिखाना चाहते हैं जिससे लोग हमसे डरें, भयभीत हों तो बड़े होने पर हमारे शरीर की बनावट भी उसी तरह हो जायेगी। यदि हम सरल, कोमल, सुन्दर या आकर्षक दिखना चाहते हैं तो बड़े होने पर हम वैसे ही दिखने लगते हैं। शरीर का रंग कैसा भी हो लेकिन उसकी बनावट (क्रूर, बलशाली दिखने जैसा या अधिकारी दिखने जैसा) जो भी विचार हमारे मन में बचपन में रहता है वैसा ही बड़ा होने पर हम बनते हैं।

यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि हमारे विचार ही हमें रोग मुक्त रख सकते हैं। यदि हम अपने विचार सकारात्मक रखें तो हम सकारात्मक बनेंगे। यदि हम अपने विचार नकारात्मक रखेंगे तो हम नकारात्मक बनेंगे।

हमारी आस्था, धर्म–कर्म भी उम्र बढ़ने के साथ–साथ बढ़ती जाती है। जैसे–जैसे उम्र बढ़ती है आध्यात्मिकता की ओर झुकाव बढ़ता जाता है जैसे–मन्दिरों में जाना, पूजा–पाठ करना इत्यादि में रुचि बढ़ती जाती है। साथ ही सही गलत का निर्णय भी अपने आप महसूस होने लगता है। जो चीज पहले निराधार लगती थी अब वही साकार लगने लगती है। इसी धर्म कर्म से सम्बन्धित बचपन की एक कहानी याद आ रही है जिसका महत्व उस समय नहीं ज्ञात था लेकिन अब मेरे हृदय को छू रही है। जो आपके समक्ष रख रहा हूँ।

एक राजा ब्राह्मणों को अपने महल के आंगन में लंगर में भोजन करा रहा था। राजा का रसोइयाँ खुले आंगन में भोजन पका रहा था। उसी समय लंगर के ऊपर से एक चील अपने पंजे में एक जिन्दा साँप (कोबरा) को लेकर आसमान में जा रही थी। तब पंजों में दबे साँप ने अपने बचाव हेतु अपने फन से चील के ऊपर जहर फेंका उस जहर की कुछ बूंदें

नीचे धरती पर पक रहे लंगर के खाने में गिर गयी। किसी को कुछ पता नहीं चला।

उसके परिणामस्वरूप भोजन करने आये ब्राह्मणों की खाना खाते ही मृत्यु हो गयी। जब राजा को ब्राह्मणों की मृत्यु का पता चला तो उसे ब्रह्म् हत्या के दोष लगने का बहुत दुख हुआ।

ऐसे में ऊपर बैठे यमराज के लिए भी यह फैसला लेना कठिन हो गया कि अनजाने में हुए इस पाप कर्म का फल किसके खाते में जायेगा?

1. राजा–जिसको पता ही नहीं कि खाना जहरीला हो गया है।
2. रसोइयां–जिसको पता ही नहीं चला कि खाना बनाते समय भोजन जहरीला हो गया है।
3. वह चील– जो अपने भोजनस्वरूप जहरीला साँप लिए राजमहल के ऊपर से गुजरी।
4. वह साँप –जिसने आत्म रक्षा में जहर निकाला।

बहुत दिनों तक यह मामला यमराज के खाते में लंम्बित रहा। निर्णय नहीं हो पा रहा था कि इस पाप के दण्ड का भागी कौन है?

कुछ समय के पश्चात् कुछ ब्राह्मण राजा से मिलने उस राज्य में आये और उन्होनें किसी महिला से राजमहल का रास्ता पूछा। उस महिला ने महल का रास्ता तो बता दिया पर रास्ता बताने के साथ–साथ ब्राह्मणों से यह भी कह दिया कि –

''देखो भाई ... जरा ध्यान रखना... वह राजा आप जैसे ब्राह्मणों को खाने में जहर देकर मार देता है।''

बस जैसे ही उस महिला ने यह शब्द कहे, उसी समय यमराज जी ने यह फैसला ले लिया कि इन मृत ब्राह्मणों की मृत्यु के पाप का फल इस महिला के खाते में जायेगा। और इसे इस पाप का फल भुगतना होगा।

यमराज के दूतों ने पूछा–प्रभु ऐसा क्यों? जबकि उन मृत ब्राह्मणों की हत्या में उस महिला की कोई भूमिका भी नहीं थी।

तब यमराज ने कहा कि भाई देखो, जब कोई व्यक्ति पाप करता है तब उसे बड़ा आनन्द मिलता है। पर उन मृत

ब्राह्मणों की हत्या से न तो राजा को आनन्द मिला .... और न ही उस रसोइया को आनन्द मिला... न ही उस साँप को आनन्द मिला... और न ही उस चील को आनन्द मिला...।

पर उस पाप–कर्म की घटना की बुराई–बखान करने से उस महिला को जरूर आनन्द मिला। इसलिए राजा के उस अनजाने पाप कर्म का फल अब इस महिला के खाते में जायेगा।

इस घटना से हमें यह सीख मिलती है कि जब भी कोई व्यक्ति जब किसी दूसरे के पाप कर्म का बखान बुरे भाव से करता है तब उस व्यक्ति के पापों का हिस्सा उस बुराई करने वाले के खाते में भी डाल दिया जाता है।

अक्सर हम सोचते हैं कि हमने जीवन में ऐसा कोई पाप नहीं किया, फिर भी हमारे जीवन में इतना कष्ट क्यों आया...?

ये कष्ट और कहीं से नहीं, बल्कि लोगों की बुराई करने के कारण उनके पाप कर्मों के भागी बनने से आया होता है जो बुराई करते ही हमारे खाते में ट्राँसफर हो जाता है।

अतः दूसरों की बुराई करने से, किसी के दिल को दुखा कर उसका मजाक बनाने से, किसी के दुष्कर्मों के बखान करने से सदैव बचें और जीवन में तथा अन्य व्यक्तियों में जो भी अच्छा है उसे सदैव देखने व अपनाने का प्रयास करें।



''पत्नी के विश्वास में बन्दर ने डाला खलल''

'पी0पी0 शर्मा''

सन् 1983 की बात है, मेरे गाँव के थाना जेवर, जिला बुलन्दशहर (वर्तमान में गौतमबुद्धनगर) से पुलिस वेरीफिकेशन के लिए दो सिपाही ग्राम प्रधान से मेरे बारे में पूछताछ कर रहे थे। प्रधान जी के मित्र संभ्रान्त ब्राह्मण परिवार से, साथ में बैठे हुए थे। सरकारी नौकरी की जानकारी होने पर वे मेरे पिताजी के पास अपनी लड़की का रिश्ता लेकर मेरे शादी के सम्बन्ध में पहुँच गये। ए0जी0, इलाहाबाद में ज्वाइन करने के बाद छुट्टी लेकर जब मैं घर पहुँचा तो उन्होने पूछा कौन से ऑफिस में नौकरी लगी है। मैंने कहा ए0जी0, इलाहाबाद में। ए0जी0 को गाँव वाले एग्रीकल्चर जानते थे, जिससे भलीभाँति परिचित थे। बस मेरी शादी हो गयी। वेतन के रू0 660/– मिलते थे। दूसरा इलाहाबाद से घर 600 किलोमीटर की दूरी पर होने से दिल्ली ट्राँसफर भी कराने के लिए प्रयास कर रहा था।

मेरी पत्नी की सहेली की शादी कुछ दिन पहले ही हुई थी, शादी में धोखा हो जाने से वे बहुत परेशान थे। एक दिन मेरी पत्नी ने बताया कि राजकुमारी के हस्बैंड ने अपने को इनकम टैक्स ऑफिस, आगरा में इंस्पेक्टर बताया था लेकिन वह वहाँ कैजुअल लेबर था। वो कहती है ये आदमी लोग बहुत झूठ बोलते हैं। मैंने कहा, उसके साथ वाकई बहुत बुरा हुआ है। मेरी पत्नी इलाहाबाद ले चलने के लिए कहती, लेकिन तनख्वाह कम होने से मैं उसे नहीं ला रहा था। कार्यालय का 1984 में वाईफरकेशन (आडिट एवं एकाउन्टस अलग अलग) हो गया था। एकाउन्टस के जोनल ऑफिस बनाए जाने की अफवाह भी थी इसलिए दिल्ली ट्रांसफर का विचार भी छोड़ दिया था।

उस समय महालेखाकार कार्यालय में तीन गेट हुआ करते थे। बार काउंसिल की ओर खुलने वाले गेट पर हबीब, सन्तोष एवं गुप्ता जी की चाय की दुकान पर कर्मचारी चाय पीते देश की राजनीति पर चर्चा किया करते थे। शाम

के पाँच बज रहे थे कार्यालय बन्द हो गया था। मैं टीएडी विंग जो बार कांउसिल गेट की ओर स्थित है, में पोस्ट था। अपने वरिष्ठ सहकर्मियों के साथ बार काउंसिल की ओर खुलने वाले गेट से बाहर निकल रहा था। मेरे अनुभाग के वरिष्ठ साथी श्री हरगोविन्द दास वर्मा जो सेवानिवृत्त हो गये हैं, मुझे साथ लेकर चाय की दुकान पर लगी भीड़ को देखने के लिए रुक गये। भीड़ के अन्दर देखा कि एक कर्मचारी के कन्धे पर एक मोटा बन्दर बैठा हुआ था, जिसके कारण वह बहुत परेशान था। उसे उतारने के लिए सभी प्रयासरत थे लेकिन कोई सफल नहीं हो पा रहा था। सम्बन्धित कर्मचारी वर्मा जी के अभिन्न मित्रों में से थे। वर्मा जी ने मुझसे कहा आप इधर खड़े रहो मैं चुपके से जाकर इस बन्दर को धक्का देता हूँ। वार्तानुसार वर्मा जी ने आनन फानन में बड़ी शीघ्रता से बन्दर को धकिया दिया। बन्दर उनके मित्र के कन्धे से कूद कर दूसरी ओर घूमा और तेजी से मेरे कन्धे पर आकर बैठ गया। अब तो शाम के साढ़े छः बज चुके थे, और मैं अपने कन्धे पर बन्दर चढ़ा देख हक्का बक्का खड़ा हुआ था। वर्मा जी और भी परेशान होकर कहने लगे शर्मा जी चुप खड़े रहो अभी हटाता हूँ इस साले को। जैसे ही वर्मा जी मेरी ओर बढ़े ही थे कि बन्दर ने मेरे बाल नोचने शुरू कर दिए। अब तो मैंने वर्मा जी को चिल्लाया अरे! भाई मेरे, दूर ही रहो, ये मेरे बालों को बकोट रहा है। अब शाम के सात बज चुके थे बन्दर मेरे कन्धे से उतरने का नाम नहीं ले रहा था। हताश होकर अपनी साइकिल को पैदल ही लेकर कन्धे पर बन्दर को लादे हुए बड़े भारी मन से घर को चल पड़ा। साथी लोग मेरे साथ पीछे चल रहे थे। वर्मा जी बोले शर्मा जी क्या करोगे अब। मैने कहा साइकिल पर ही बैठ लेता हूँ पैदल चलते हुए तो काफी समय लग जायेगा। मैं साइकिल पर बैठा और बन्दर मेरे कन्धे पर शान से बैठा हुआ था। शाम के साढ़े सात बज चुके थे। मेरा भी धीरे–धीरे डर खत्म होता जा रहा था लेकिन चिन्ता थी कि घर में पत्नी से क्या कहूँगा।

मैं किराये पर कुशवाहा जी के मकान भावापुर, इलाहाबाद में रहता था। पानी की टंकी से अन्य साथी अपने–अपने घर की दिशा में जाते समय मुझसे पूछे शर्मा जी हम चलें भाई। मैं कहता ठीक है चलिए और वे चले जाते लेकिन वर्मा जी जो सुलेमसराय में रहते थे कुछ नहीं बोल पा रहे थे। मैने स्वयं उनसे कहा वर्मा जी आप भी घर जाइए। वर्मा जी बोले क्या बताएं बड़ी आफत लगी यह तो। मैनें कहा कोई बात नहीं जाइए। श्री अरूण कुमार श्रीवास्तव जो

वर्तमान में वरिष्ठ लेखाधिकारी हैं, स्व0 प्रमोद कुमार भावापुर में ही रहते थे, मेरे साथ ही साइकिल से चल रहे थे। पुल पार करके खुशरोबाग की दीवार के पश्चिम की ओर से जाने वाली सड़क से हम लोग चले जा रहे थे।

खुल्दाबाद वाली सड़क आने पर, उसकी बायीं ओर फुटपाथ पर फल की दुकान लगाये एक महिला फल बेचती थी, उस समय आम का सीजन था। मोटे पके आम टोकरी में रखे हुए थे। सड़क की क्रासिंग होने से हमने एक क्षण के लिए साइकिल रोकी ही थी कि बन्दर ने बड़ी शीघ्रता से उछल कर टोकरी में से एक बड़ा सा आम लेकर झटपट पुनः मेरे कन्धे पर आकर बैठ गया। हम लोग जैसे चले महिला चिल्लाई! ऐ बन्दर वाले आम के पैसे देकर जा। अब तो हम फिर रूक गये और मैने उसे बताया कि यह मेरा बन्दर नहीं है, यह तो मेरे कन्धे पर जबरन बैठा है। वह बोली इधर–उधर मत करें, चुपचाप पैसवा निकाल। मेरे साथियों के समझाने पर भी वह नहीं मानी। मुझे पैसा देने की चिन्ता नहीं थी बस चिन्ता यह थी कि कोई यह मान ले कि यह बन्दर मेरा नहीं है। बहरहाल मैनें उससे पूछा कि कितना पैसा देना है। उसने पाँच रूपये बताये और मैनें उसे पैसे दे दिए।

चौराहा पार करके अन्दर की ओर बढ़ा ही था कि बन्दर ने मेरे सिर पर आम खाना शुरू कर दिया जिसमें से रस मेरे सिर पर टपकना शुरू हो गया था। अब तो खीझते हुए बड़े प्यार से मैने उससे कहा मेरे सिर पर मत खा यहाँ साइकिल पर आके बैठकर खा ले। और वह तुरन्त साइकिल के डन्डे पर आकर बैठ गया और आम खाने लगा।

अपने घर के नजदीक पहुँचने पर मुहल्ले के सभी बच्चे बड़े कौतूहल के साथ हल्ला करने लगे बन्दर वाला –बन्दर वाला। अब तो मेरे अन्दर तरह–तरह के प्रश्नों का उमड़ना शुरू हो गया था। घर के दरवाजे पर एक छोटा सा गेट था, साइकिल से उतर कर गेट खोला ही था कि बन्दर साइकिल से कूद मकान की छत पर चला गया और मैं सीधे अपने कमरे में चला गया था।

मकान के बगल में एक सिन्धी परिवार का मकान का था जिसकी बालकनी में एक छींके पर खाना आदि रखा था। सिन्धी परिवार की हमारे मकान मालिक से खटपट भी चल रही थी। जब मेरे पीछे–पीछे हल्ला मचाते बच्चों की आवाज सुनी तो मैडम सिन्धी को मैंने अपनी बालकनी से नीचे झांकते हुए देखा था। थोड़ी देर बाद बन्दर लपका और

छीके से खाने का सामान लेकर खाने लगा। परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल गयीं। सिन्धी परिवार का आक्रोश सातवें आसमान पर आ गया था। मेरे मकान मालिक से लड़ाई होने लगी थी। मैं अपनी पत्नी के साथ चुपचाप अपने कमरे में चाय पी रहा था, लड़ाई का शोर गुल तेज होने पर पत्नी और मैं बाहर निकले तो नजारा ही बदला हुआ था। मकान मालिक अपनी पत्नी के साथ मेरी ओर लपके और कहने लगे ये क्या बखेड़ा खड़ा कर दिया है आपने। अब तो मेरी पत्नी आश्चर्य से मुझे घूरने लगी क्या बात है। मैनें कहा कुछ नहीं एक बन्दर मेरे कन्धे पर ऑफिस से बैठकर आ गया है। पत्नी बड़े आश्चर्य से, अरे! आपके ऑफिस में बन्दर पाले जाते हैं क्या? मैं ठीक समझ रही थी कि आप मुझे इलाहाबाद क्यों नहीं लाते थे, आप तो यहाँ बन्दर नचाते हैं। इतने में मकान मालकिन हाबी होकर बोली हमें कुछ नहीं सुनना है आप मकान तुरन्त खाली करिये।

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर सोच ही रहा था कि पड़ोस में रेलवे में ड्राइवर जो मेरे साथ दूध लेने साथ–साथ जाते थे आ गये। पूरा वाकया उन्हे भी मैनें बताया। उन्होने सलाह दी कि चकिया चौराहे पर बन्दर वाले रहते हैं उनके यहाँ पर इसे छोड़ आइये। मैं फिर से साइकिल उठा कर बाहर आकर बन्दर की ओर देखते हुए बोला हे राम लाल आओ यहाँ से चलें। सच में ही वह तुरन्त मेरी साइकिल पर आगे बैठ गया और मैं उसे लेकर सीधा चकिया पहुँच गया। सम्पर्क करने पर मालूम हुआ कि बरसात शुरू हो जाने से बन्दर वाले अपने घरों को लौट गये हैं। रात्रि के साढ़े नौ बज चुके थे मैं आसमान की ओर देखता हुआ साइकिल से उतर कर नीचे खड़ा हुआ। मेरे सामने एक रिक्शा जिसमें पीछे लगी छतरी पर पर्दा नहीं लगा हुआ था। साइकिल से कूद कर बन्दर उस पर लटक कर झूलने लगा। मौका देख जल्दी से मैं भाग लिया वह भी मेरा पीछा किया लेकिन बीच में जीप आ जाने से वह पकड़ नहीं पाया। मैं जल्दी से बेनीगंज की ओर भागा। अपने घर के चौराहे पर आकर सांस ली। चूंकि सुबह नास्ते के लिए ब्रेड लेनी थी मैं सामने दुकान पर खड़ा था एक परिचित पूछने लगे कि छोड़ आये बन्दर को। मैं अभी उन्हें बता ही रहा था कि वह बन्दर एक सज्जन के कन्धे पर बैठा चला आ रहा था। मैं पूरा वाकया सुनाये बिना अपने घर की ओर भाग लिया।



''हँसता बूढ़ा''

'विकास जायसवाल'

घर के सामने चमचमाती कार खड़ी हुई, देखा कि ड्राइवर सीट पर मेरा पुत्र सवार है। आवाज आयी पापा ..... आयें आज कार से सैर करने निकलते हैं। पुत्र की आवाज सुनकर डगमगाते कदमों से चल कर कार तक पहुँचा तो कार का दरवाजा खुला और मैं कार की पिछली सीट पर गिर सा गया। तब तक घर के अन्य सदस्य आगे और पीछे की सीटों पर अपना स्थान ले लिए। कार का ए0सी0 ऑन कर दिया गया। कार चल पड़ी और धीरे–धीरे आगे की ओर रेंगने लगी। थोड़ी ही देर में कार गति पकड़ने लगी तो लगा कि कार गली से निकल कर मार्ग पर आ पहुँची है। मैं खुश था कि मैं आज पुत्र की नयी कार पर सवार हूँ।

अचानक मेरी निगाह ड्राइवर सीट के ऊपर लगे दर्पण पर लटकते गोल मटोल पुतले पर पड़ी, जो कि आकृति में बूढ़ा सा प्रतीत हो रहा था और ठहाका लगाता लग रहा था। यह पुतला रेशम की मोटी चमकती डोर पर लटका था, जो उसके गले में बंधी थी। कार की गति के कारण पुतला झूल रहा था।

झूलते पुतले को देखते–देखते मैं अपने अतीत में खो सा गया..... एक अभाव भरे परिवार में जन्म लिया मैंने। मैं बाल्यावस्था से ही संघर्षशील था इसी गुण के बल पर जीवन को बढ़ाता रहा, शैशवावस्था से किशोरावस्था तक का सफर खेल–खेल में पूरा हुआ। पढ़ाई पूरी होते–होते युवावस्था में पैर रख चुका था। परमेश्वर की कृपा से एक छोटी सी नौकरी मिल गयी और जीवन का आधार मिल गया। रोजगार मिलने के कुछ दिनों बाद ही मेरा विवाह मान्या से हो गया।

भगवान ने कृपा की तो हमारे आंगन में एक बालक खेलने लगा, जिसका नाम हमने पुष्प रखा था। उसके जन्म लेने पर हमारी खुशी इतनी बढ़ी की हमने एक उत्सव ही कर डाला, जिसमें तमाम रिश्तेदारों, मित्रगणों को आमंत्रित कर

उनका मुँह मीठा कराया। किन्नरों ने भी गाना गा–गाकर अपनी जेबें भरीं। जिसको जो बना वह लाभ पाकर प्रस्थान कर गया। फिर जीवन सामान्य हो गया।

वर्षों बाद भगवान ने दूसरे पुत्र को पत्नी की झोली में डाल दिया। अब तो हमारी खुशी का ठिकाना न रहा।

पुत्र प्राप्ति की खुशी में ऐसा बौराया कि हमने बालक का नाम पुष्पराज रख डाला।

हमारी खुशी शायद भगवान को मंजूर न था, जो हमारे भाव को अहम समझ डाला।

एक बज्रपात हुआ! हमारा फूल मुरझाया, पुष्पराज अपने मूल तत्वों में समाया।

भगवान का प्रसाद भगवान में समाया।

समय के साथ घाव भरता रहा और जीवन सामान्य होता गया। पुष्प की पढ़ाई होते–होते उसको एक अच्छी सी नौकरी मिल गयी। उसकी खुशियाँ हमारी खुशी बढ़ाती रही। हमने उसका घर बसाने का मन बनाया तो पत्नी ने मन की बात पुत्र से कह डाली। उसने भी माँ से कहा कि मुझे खूबसूरत लड़की से ही विवाह करना है। पत्नी ने कहा ठीक है तुझे गुलाब सी खूबसूरत बहू लाऊँगी।

एक दिन वह भी आ गया जब हमने पुष्प का विवाह कर दिया। बहू अत्यन्त सुन्दर मिली जो पहले एक प्राइवेट कम्पनी में जॉब करती थी। पुत्र–पुत्रवधू अपने ही घर में रहने लगे। परिवार बढ़ा और अब तक एक पौत्र एवं एक पौत्री की वृद्धि हो गयी थी।

समय ने करवट ली, जो पुष्प कल तक हमारा था, हमारी हर बात मानता था। हमारा हमेशा ख्याल रखता था, वह अब बदलने लगा था। हमसे दूर होता हुआ अपने परिवार का होकर रह गया। मानों हम उससे अलग थे।

पत्नी को लगा कि शायद बहू के बहकावे में पुष्प ऐसा व्यवहार करता है। उसने बहू मालती को समझाया था–हम तुम्हे बेहद प्यार करते हैं, क्योंकि तुम हमारे प्रिय पुत्र की पत्नी हो। बहू–बेटा हमारा भी ध्यान रखो हम बूढ़े हो चले और हम कमजोर हो गये हैं। मालती आग बबूला होते हुए बोली– घर में जो आता है उसी में चलाना है। कौन हम आपको लाठी मारे दे रहे हैं। पुत्र यह सुन–देख कर भी शान्त बना रहा।

दुखी पत्नी को देख मैंने समझाने का प्रयास किया, किन्तु आहत मन को कुछ न समझ आया, सो वह मौन हो

गयी। हमारे कष्टों में वृद्धि की शुरूआत हो चुकी थी। अब हमें लगने लगा कि हमसे भूल हुई। हम भूल गये थे कि समधी–समधन ने अपने गुलाब के साथ–साथ कांटे भी परोसे थे। घर की शान्ति बनी रहे इसलिए हम बहू को समझाने का प्रयास करते, किन्तु वह अपनी ही अलापती और अपमानित करने से न चूकती और यह भी न सोचती कि बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

सुख–दुख सहते–सहते हम टूटते गए और बीमारी हम पर हाबी हो गयी। एक दिन ऐसा आया कि मेरी पत्नी सारे कस्मे–वादे झुठलाकर स्वर्ग सिधार गयी और मुझे अकेला छोड़ गयी। मेरा विदीर्ण हृदय टूट सा गया और मेरी आवाज मन्द पड़ने लगी। अब मैं खाने–पीने के लिए भी पुत्रवधू पर आश्रित हो गया था। मेरा अपना पैसा भी मुझे भोजन न देता था। मन का खाने को तरसते हुए बाजार में अच्छा खाने की हिम्मत न पड़ती। सोचता लोग क्या कहेंगे?

बहू तो वही पकाती, जो उसे अपने पति और बच्चों को प्रिय था। मेरी पसन्द–मेरी इच्छा महत्वहीन हो चुकी थी। सबकुछ सहते–सहते मनहूस सा हो गया था मैं। मेरी खुशियों के साथ मेरी हंसी गायब हो चुकी थी।

चालाक पुत्र और पुत्रवधू किसी न किसी बहाने मेरी बचत का पैसा खींचते रहे। मैं समझकर भी कुछ करने में समर्थ न था। पेंशन मिलने से पहले ही लम्बी सूची मिल जाती थी। साथ–साथ आर्थिक तंगी का मंत्र सुना दिया जाता था..... न चाह कर भी दुनियादारी निभानी पड़ती थी।

अचानक तन्द्रा तब टूटी जब मैनें सुना कि मेरी पोती बोल रही थी–मेरी बीमारी इतनी गम्भीर थोड़ी थी, वह तो मैं मम्मी–पापा के कहने पर बहाना बनाकर लेटी रहती थी। पोते ने बताया था कि बहन के इलाज/ऑपरेशन में चार–पाँच लाख लगेंगे और पापा के पास पैसे कम हैं।

फिर क्या था कि मैं लटके बूढ़े को पुनः निहारने लगा। मुझे लगा कि मेरे गले में ठगी की रस्सी कसती जा रही है। मैंने इलाज हेतु बचत के सारे पैसे बेटे को सौंप दिया था, ताकि पोती बच जाय। लेकिन उस पैसे से कार आ चुकी थी। मैं हंसता गया.... हंसता गया.... इतना हंसा कि आंखे और मुँह दोनों खुले रहे और बैठे–बैठे मेरे प्राण निकल गये। फिर भी मेरा हंसता मुख उसकी भलाई की कामना करता रहा.



''लोकतंत्र, मानव अस्तित्व और चुनौतियाँ''

'कल्याण सिंह'

''था मैं धागे में समाया, मोती के रूप में,
निकल पड़ा धागे को तोड़, खुद को चमकाने में,
चमका दिया खुद को किन्तु इसकी प्रकाश किसी और पर क्यों न पड़ी,
क्या सच में थी वो चमक, या थी भ्रम और अन्धकार की घड़ी''

उपर्युक्त पंक्तियाँ मेरे (मानव) जीवन के मोती रूपी अनुभवों की माला से टूटी एक मोती है जो मानव के इतिहास से अबतक के सफर को बयां करती है। जन्म से लेकर बचपन के वर्षों तक मैं दुनिया में उपस्थित सभी जीवों के समतुल्य ही था, चूंकि यही मुझे ज्ञात था या कुछ न मुझे ज्ञात था। दुनिया में होते हुए भी दुनिया से अनभिज्ञ था लेकिन खुशी, शान्ति एवं एकता की धागा में अनेकताओं के साथ पिरोया गया था। लेकिन सभी जीवों में मैं (मानव) तर्क और ज्ञान के आधार पर अलग व दूर होता गया। सबों से दूर होना अच्छा नहीं लगता लेकिन बुद्धिमान मानव होने का परिचय जो देना था और इसलिए एक दिन वह धागा टूट गया और मैं सबों में बिखर गया जब मेरे सपनों में पंख लगा और ऊँची उड़ान के साथ मैं लोकतांत्रिक धागा में समा गया।

यदि सपने बड़े हों, उचित हों, उसमें सच्चाई और ईमानदारी की खुशबू हो तो सपने जरूर पूरे होते हैं लेकिन सपनों में यदि ईमानदारी की कमी हो तो सपनों के पंख फड़फड़ाने से खुद के साथ दूसरों का भी नुकसान होता है। सिर्फ हम मानव ने अपनी उत्पत्ति से लेकर आजतक कई महान उपलब्धियों के साथ खुद के सामने खतरों से भरी चुनौतियों के

पहाड़ खड़े कर दिए हैं जिससे निपटने के लिए हर व्यक्ति, समाज, देश की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी क्योंकि इक्कीसवीं शताब्दी में पहले से कहीं गम्भीर चुनौतियाँ मानव के सामने हैं।

हम दो से चार हुए, हजार से लाख हुए और करोड़ से हुए अरब। यद्यपि हमने मानवता का कर्तव्य न भी निभाया फिर भी पृथ्वी ने नियमित रूप से हमें अपनी गोद में बैठा प्राकृतिक रूपी आंचल से छाँव और पनाह देती रही है। हमें मुफ्त में पानी, हवा, अनाज, मौसम, मनमोहक प्रकृति इत्यादि देती रही बदले में हमने पृथ्वी को क्या दिया इसपर हमें सोचना होगा। हम व्यक्ति से क्रमशः परिवार, समाज, समूह और बने राज्य और इस राज्य को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए बने शासन के तंत्र, जो समय के साथ अपने स्वरूप में बदलता रहा।

शासन की सर्वोत्तम पद्धति तक पहुँचने में मानव ने काफी समय लगाया जिसमें पश्चिमी देशों के विद्वानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । सुकरात, प्लेटो और अरस्तू जैसे विद्वानों की तिकड़ी ने मानव सभ्यता और शासन के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई विद्वानों की विचारधाराओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही मसलन प्लेटो और अरस्तू की आदर्शवादी, मार्क्स और हाब्स की भौतिकवादी, मार्क्स की समाजवादी, बौद्ध, गाँधीवादी और यथार्थवादी विचारधारायें आदि। यदि इन सभी विचारधाराओं के सार के रूप में देखें तो लोकतांत्रिक व्यवस्था सर्वोत्तम नजर आता है। जिसमें विधि व संविधान द्वारा शासन, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व एक दूसरे से असहमत होने की स्वतंत्रता और शासन उत्तरदायी एवं जनता की सहमति द्वारा संचालित होती है जो आज के समय में प्रासंगिक व सर्वोत्तम व्यवस्था है।

आज यदि लोकतंत्र एवं मानव अस्तित्व के सम्बन्ध में भारत के उदाहरण सहित विश्व के सन्दर्भ में अवलोकन करें तो भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था दुनिया की सर्वोत्तम व्यवस्था नजर आती है और कमोवेश ऐसी ही व्यवस्था अपने–अपने स्वरूप में अधिकांश देशों में लागू है। हमने इस लोकतांत्रिक व्यवस्था और अपने जिज्ञासु प्रवृत्ति से अनेकों उपलब्धियों को पाया है लेकिन हमने विकास और व्यक्तिगत हित की अंधी दौड़ में मानवता के उसूलों और कर्तव्यों की बलि भी चढ़ा दी है जिसके परिणामस्वरूप कई विकराल समस्याएं उभर कर सामने खड़ी हैं। जैसे–जलवायु परिवर्तन,

जल संकट, वायु प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास, विनाशक हथियार का बढ़ना, संक्रामक रोगों का फैलना, पर्यावरण का लगातार क्षरण, असमानता की बढ़ती खाई, भुखमरी, कुपोषण, आतंकवाद, युद्ध की आशंका, शिक्षा की गुणवत्ता में कमी, आध्यात्म से भौतिकवाद की ओर बढ़ना, मीडिया की नकारात्मक भूमिका, सिर्फ व्यक्तिगत हित देखना, अपने कर्तव्यों से विमुख होना इत्यादि अनेकों समस्याओं ने सभी देशों के सामने कई जीवों के विलुप्त होने की घटना के साथ मानव के अस्तित्व को चुनौती दे डाली है। खुशी की बात यह है कि हम उपर्युक्त समस्याओं से निपट सकते हैं यदि हम केवल व्यक्ति या देश की संरक्षणवादी नीति को छोड़कर सामूहिक विकास की भावना से आगे बढ़ें। हम कभी यह न सोचें कि हम तो जी लिए आने वाले सौ सालों की चिन्ता क्यों करें अगर हम ऐसा सोच लिए फिर हममें मानवता और अपने धर्म का कोई गुण नही रह पायेगा।

यदि भारत के सन्दर्भ में बात करें तो हमारे देश में भी उपर्युक्त समस्याएं विद्यमान हैं लेकिन हम इससे निपटने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं जिसकी सराहना विश्व पटल पर भी हो रही है। एक समय अंग्रेजों और कुछ विद्वानों का मत था कि भारत कभी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम नहीं रख पायेगा लेकिन हमने इतनी विविधताओं में एकता के साथ लोकतांत्रिक व्यवस्था के उत्तम रूप को दिखाकर दुनिया को अचरज में डाल दिया लेकिन हम सिर्फ इसी उपलब्धि से खुश नहीं हो सकते। 70 साल की आजादी के बाद भी हमारे सामने उपर्युक्त समस्याओं से निपटने की चुनौती है जिसके लिए सरकार के साथ व्यक्तिगत स्तर पर अपनी–अपनी भूमिका निभानी होगी। मसलन देश में एकता और लोकतंत्र की जड़ों को और भी मजबूत करना होगा, जात–पात वाली मानसिकता से ऊपर उठना होगा, धर्म के आधार पर झगड़ा नहीं प्रेम फैलाना होगा, पूरे देश को परिवार मानकर बढ़ना होगा, गिरे हुए को उठाना और उठे हुए के साथ मिलकर उठना होगा, संविधान में मिले अधिकारों के उपयोग के साथ मिले मूल कर्तव्यों को समझना होगा, सरकार की योजनाओं को सफल बनाने में योगदान करना होगा जैसा की 'स्वच्छ भारत अभियान' में देखा गया साथ ही गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी और डा0 अब्दुल कलाम जैसे महान लोगों के विचारों को फैलाना होगा, जरूरत से ज्यादा कानून भी नहीं बनाना चाहिए फिर मानव की बौद्धिक क्षमता का क्या होगा। हमें खुद समझना होगा कि क्या सही

है, क्या गलत है, न कि हमें कोई कानून या सरकार बतायेगी। कूड़ा कहाँ फेकना है, सार्वजनिक जगह को साफ रखना है, दूसरे का आदर करना है, क्या यह सब हम बुद्धिमान मानव को किसी को बतानी पड़ेगी फिर हमारे और दूसरे जीव में क्या फर्क रह जायेगा इस पर हमें सोचना होगा।

जनता की भूमिका के साथ किसी भी लोकतंत्र में चार स्तम्भों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जिन्हे अपनी–अपनी भूमिका ईमानदारी पूर्वक निभाते रहना होगा मसलन व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और पत्रकारिता/मीडिया। जहाँ सरकार को अपनी नीयत और नीति लगातार बेहतर करनी होगी वहीं कार्यपालिका को जनता की त्वरित सेवा के लिए ईमानदारी पूर्वक तैयार रहना होगा। ईमानदार न्यायपालिका को न्याय देने की गति को चीते की चाल की तरह तेजी पकड़नी होगी ताकि सभी को उसके जीवन में ही न्याय मिल सके, वहीं धूमिल छवि की चादर ओढ़े मीडिया को इसे साफ कर गरीबों की आवाज बन कर और निष्पक्ष होकर लोकतंत्र की जड़ों को और भी गहरी और मजबूत बनाने की लगातार प्रयास करनी होगी तब जाकर हम विकसित देशों की श्रेणी में पहुंच पायेंगे और दुनिया में मानव अस्तित्व के खतरों से बचाने में अपनी महत्वपूर्ण व और भी अधिक भूमिका निभायेंगे। भारत की संस्कृति और सभ्यता में विश्व को बचाने की अद्भुत क्षमता है इस बात का हम गर्व करते हुए धरातल पर पहल करनी होगी। हम विश्व गुरू थे और सदैव बने रहें इसके लिए हर भारतीय को और भी ज्यादा अपना–अपना योगदान देना चाहिए ताकि हमारे वर्तमान पीढ़ी के साथ आने वाली पीढ़ी भी अपने पूर्वज पर गर्व कर सके जैसे कि हम करते आ रहे हैं। अन्त में यही कहना चाहूंगा कि –

"वक्त बदला है फिर बदलेगा, सूरज डूबा है तो अवश्य निकलेगा,
नफरत के बीज बोने से प्रेम का फूल न खिलेगा,
गुलाब की चाहत में, कांटा तो चुभेगा,
वक्त बदला है फिर बदलेगा, सूरज डूबा है तो अवश्य निकलेगा"



''कुम्भ मेला''

'प्रीति सिंह'

''पृथ्वी पर होने वाला सबसे बड़ा आयोजन है ये कुम्भ मेला,
भारत के हृदय में झांकने वाला प्रमुख झरोखा है ये कुम्भ मेला।''

कुम्भ सनातन धर्म के मर्म को जानने का एक अवसर है जिन्हे भारत को जानना है कुम्भ के माध्यम से जाना जा सकता है, जिन्हे भारत को समझना है वो कुम्भ से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर सकते हैं। सही अर्थों में कुम्भ और भारत एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। यह मानवता का अखिल प्रवाह है, यह एक उत्सव है चेतना के विस्तार का, कुम्भ एक महायज्ञ है जीव और जगत के कल्याण का। कुम्भ आनन्द का उत्सव है समस्त दुखों एवं चिन्ताओं से मुक्त होकर जीवन की मधुरता को पढ़ सकने का एक अवसर है। कण–कण में निव्यता का अनुभव कराने वाला ये मेला मानव जीवन का महोत्सव है।

कुम्भ की पौराणिक पृष्ठभूमि – पुराणों के अनुसार देवासुर संग्राम के बाद दोनों पक्षों में समुद्र मंथन हुआ और मंथन से 14 रत्नों की प्राप्ति हुई, जिसे दोनों पक्षों में बराबर बांट दिया गया और अमृत कलश देवताओं को दिया गया। जिससे दोनों पक्षों में युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गयी तथा अमृत कलश का दायित्व इन्द्र पुत्र जयन्त को सौंपा गया, जयन्त जब दानवों से अमृत कलश की रक्षा हेतु भाग रहा था तभी कलश से कुछ बूँदें पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरीं। ये स्थान है – हरिद्वार, उज्जैन, प्रयागराज और नाशिक।

जयन्त को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है। यही कारण है कि इन स्थानों पर ग्रह राशियों के विशेष संयोग पर हर तीसरे वर्ष में चार स्थानों (3X4=12) में से एक पर कुम्भ मेले का आयोजन होता है।

हरिद्वार में गंगा, प्रयागराज में त्रिवेणी संगम, नासिक में गोदावरी और उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर।

वैज्ञानिक महत्वः–ज्योतिष गणना के अनुसार जिस वर्ष जिस भी स्थान पर कुम्भ का आयोजन होता है वहाँ ग्रहों और नक्षत्रों की ऐसी स्थितियाँ निर्मित होती है जिससे शरीर,मन और आत्मा का सर्वोत्तम विकास सम्भव है ।

सामाजिक महत्वः–भारत में कुम्भ मेला दुनिया में किसी अन्य धार्मिक आयोजन की तुलना में अधिक लोगों को आकर्षित करता है । जब लोग कुम्भ में जाते हैं तो वे जाति, पंत, भाषा और क्षेत्र के सभी भेदों को भूल जाते हैं, कुम्भ में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ मानव होता है । सबका एक उद्देश्य और एक ही लक्ष्य, यदि कोई विविधता में एकता देखना चाहता है तो भारत के कुम्भ मेले से बेहतर उदाहरण नहीं हो सकता । कुम्भ अपनी विशालता के लिए तो प्रसिद्ध है ही लेकिन अपनी विविधता के लिए भी आश्चर्य चकित करता है । उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक, गंगा से कावेरी तक, हिमालय से सहयाद्री तक ज्ञान की धारायें, ध्यान की धारायें, चेतना की धारायें समा आती है इस अमृत महाकुम्भ में ।

सांस्कृतिक महत्वः– कुम्भ के सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए ही यूनेस्को ने वर्ष 2017 में विश्व में मानवता की अमूर्त विरासत घोषित किया है, देश भर से साधू,सन्त ,सन्यासी जो विभिन्न मत, सम्प्रदाय एवं अखाड़ों से हैं अपनी टोलियों के साथ कुम्भ मे अपना डेरा जमाते हैं जंगलों, पर्वतों, गुफाओं और कंदराओं में रहने वाले सभी साधू सन्यासी सम्मिलित होते है और वो भी बिना किसी आमंत्रण के ।

(भिन्न भाषा, भिन्न क्षेत्र, भिन्न सम्प्रदाय, भिन्न संस्कृति लेकिन असंख्य भिन्नताओं के बीच भी एक आधारभूत साम्य, सत्य की खोज वो भी विभिन्न मार्गों से ।)

आर्थिक महत्वः–इस वर्ष कुम्भ मेला पन्द्रह जनवरी से प्रयागराज में शुरू हुआ जो कि 4 मार्च 2019 को समाप्त होगा । उत्तर–प्रदेश सरकार ने पचास दिनों के कुम्भ मेले के लिए 4200 करोड़ रूपये आवंटित किया है जो कि 2013 महाकुम्भ मेले की तुलना में तीन गुना अधिक है यह अब तक का सबसे महंगा कुम्भ है जिसे लेकर काफी चर्चा हो रही है । इसी बीच इन्डस्ट्री बाडी कन्फेडरेशन आफ इण्डिया इन्डस्ट्री ने कहा है कि इस आयोजन से उत्तर–प्रदेश के लिए बारह लाख करोड़ का राजस्व उत्पन्न होगा । रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कुम्भ एक अध्यात्मिक एवं धार्मिक आयोजन है लेकिन

इससे जुड़ी आर्थिक गतिविधियों में छः लाख लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

आलोचनाः– कुम्भ मेले के दौरान एक कृत्रिम शहर का निर्माण होता है, एक अस्थाई नगर बसता है और इतनी बड़ी आबादी को नियंत्रित करना, बहुत ही कम समय में लोगों को बिजली, पानी, स्वास्थ्य सुविधाएं और शौचालयों की व्यवस्था करना होता है इसमें बहुत बड़ी मात्रा में धन व्यय होता है, कभी–कभी जिस शहर में कुम्भ मेले का आयोजन होता है वहाँ के स्थानीय लोगों को अव्यवस्था तथा यातायात संबंधी असुविधा का सामना करना पड़ता है, आवंटित धन का सदुपयोग न होना तथा भगदड़ जैसी घटनाएं भी आलोचना की वजह है ।

निष्कर्षः–अनुपातिक तुलना देखें तो कुम्भ की भव्यता और दिव्यता के आगे ऐसी छिटपुट आलोचना स्वाभाविक है । कुम्भ मेला भारत का राष्ट्रीय समागम है यह सनातन परम्परा का प्राण है यह एक उच्चतम भावना है जो किसी राष्ट्र की साझा संस्कृति के रूप में प्रकट होती है । कुम्भ इस दृष्टि से भी विलक्षण है कि यहाँ देश के कोने कोने से संत महात्मा गुरू आचार्य स्वयं गृहस्थों के बीच एकत्रित होते हैं। जहाँ तीर्थाटन में यात्री दुर्गम तीर्थों में जाकर इन महात्माओं के दर्शन कर पाते हैं वहीं इसके उलट कुम्भ में दुर्गम स्थानों से आकर ये महात्मा गृहस्थों के बीच डेरा जमाते हैं कुम्भ के समय इन संत महात्माओं की साधना,ज्ञान चर्चा और सत्संग से अनवरत अमृत छलकता है जिसे पाने देश विदेश के साधक दौड़े चले आते हैं शायद यही वह कारण है कि कुम्भ हजारों वर्षों से न सिर्फ आयोजित होता रहा है बल्कि हर बार इसका महत्व, भव्यता और गरिमा बढ़ती चली जा रही है । तकनीकी विकास, संचार और वैज्ञानिक पद्धति ने बहुत सी चीजों को अप्रसंगिक बना दिया है लेकिन कुम्भ इक्कीसवीं सदी में भी उमंग, उल्लास और भव्यता के साथ आयोजित किया जा रहा है ।

सेवानिवृत्ति पर अधिकारी को सम्मान प्रदान करती हुई महालेखाकार-प्रथम महोदया



हिन्दी पखवाड़ा-2018 पर दीप प्रज्ज्वलित करती हुई महालेखाकार-द्वितीय महोदया



स्वतन्त्रता दिवस की कुछ झलकियां













स्वतन्त्रता दिवस की कुछ झलकियां













हिन्दी पखवाड़ा-2018 की कुछ झलकियां













हिन्दी पखवाड़ा-2018 की कुछ झलकियां













हिन्दी कार्यशाला-2018 की कुछ झलकियां





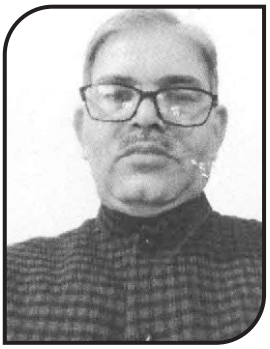






द्वादश अंक-2019

काव्य संगम



''साथ रहे पर समझ ना पाये''

'देव मणि मिश्र'

साथ रहे पर समझ ना पाये;
उर उलझन के राग सुनाये;
कौन हैं अपने कौन पराये;
उर उत्कंठा कौन जगाये।।

तिनका–तिनका जोड़ा जीवन;
जोग जतन से इसको ढाला;
कल तक था ये अमिय मूरिमय;
अब लगता है विष का प्याला;
होठों से कैसे इसे लगाये;
साथ रहे पर समझ ना पाये।।

उन्मुक्त कुलाचें कल तक जो;
भरता, फिरता, स्वछन्द रहा;
ऐसा घटित हुआ क्या पल में;
जीवन क्यूँकर अब सहम रहा।।

कैसे यह उलझन सुलझाएँ;

साथ रहें पर समझ न पाएँ।।

पंख लगाकर अरमानों के;

नभ ओर सतत उड़ते जाएँ;

उर अभिलाषा ऐसी लेकर;

थकें नहीं उड़कर बढ़ जाएँ;

साथ रहे पर समझ न पाये।।

जीवन पथ की सुन्दर गाड़ी,

दो पटरी पर दौड़ लगाए।

चलते–चलते रेल के पहिए,

बीच राह में थम न जाएँ।।

आस सांस की अटकी तुममें,;

तू ही बस इसे पार लगाए,

साथ चले अरू समझ भी जाएँ।।

साथ रहे पर समझ न पाये।

उर उलझन के राग सुनाये।।



''विदाई गीत''

'राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव'

चन्दन इस नन्दन कानन का,
अद्भुत फूल गुलाब है।
कर्मयोगी सा तेरा जीवन,
प्रेरित ये परिवार है।

सरल सहज स्वाभाविक जीवन,
हर दिल ने स्वीकार किया।
कर्म–समर्पण अमिट है चन्दन,
करते हम सब तेरा वन्दन।

कार्यकाल पूरा होने पर,
विदा आज तुम्हें करना है।
यादगार उन लम्हों पर है,
शत्–शत् अभिनन्दन है चन्दन।



''हो मंगलाचरण!''

'प्रत्यूष अवस्थी'

राष्ट्र के प्रत्येक सैनिक वीर का वन्दन।
तव चरण की धूलि मेरे भाल का चन्दन।।

हम सुरक्षित हैं कि तुमने रक्त के पहरे लगाये,
हम सुरक्षित हैं कि तुमने मृत्यु के सेहरे सजाये।
तुम चढ़ाते हो स्वयं को खुश रहे जन–जन,
तव चरण की धूलि मेरे भाल का चन्दन।।

हे मेरे अशफ़ाक! मेरे चन्द्रशेखर वीर!,
हे मेरे विस्मिल! भगत! हे उधम सिंह से धीर!
छलनी वो ''यदुनाथ'' का सीना है आँखों में,
शत्रु का मेजर पड़ा जो उसके पाँवों में।।

''अब्दुल हमीद'' से वीर थे माँ भारती के लाल,
हंसते हुए वो 'सोमनाथ' चढ़ा गए जो भाल।
वो ''पाण्डे'' जो क्रान्ति का कर गया शुभ ''मंगल'',
फिर याद आ रहा है वो आजादी का दंगल।।

ना हिन्दू था कोई ना मुसलमान था कोई,
ना राम पूजे जाते ना रहमान था कोई।
थी सबकी एक देवी अपनी ''पूज्य धरती माँ'',
निज रक्त अर्घ्य देने को हर वीर सज्ज था।।

ना ''धर्म'' की बहस के लिए वक्त था कहीं,
''सत्ता'' पे बहाने के लिए रक्त था नहीं।
हर दिल की इक ''अजान'' एक ''मंत्रगान'' था,
हर व्यक्ति एक भारतीय इंसान था।।

फिर से उठो! के आज आस्तीन में पले,
हैं ''सर्प'' दंशने पुनः माँ के चरण चले।
अपना ज़मीर फिर से जगा ले अरे इंसान,
ना बेंच डालें माँ तेरी ''कुर्सी के ये भगवान''।।

जो हो रहा गलत उसे तू देख और पहचान!,
मत खेल कर भविष्य से सब देखता भगवान!
बेटी बचा बेटी पढ़ा! और माँ को बेच दे?
इस घृणित राजनीति से अपने को खींच ले!

मस्तक लगा ले फिर से तू सद्भावना चन्दन!
भारत बने मंगल भवन, हो मंगलाचरण!



''नेता बना दो''

'रवीन्द्र कुमार शर्मा'

हे ईश्वर तू हमें नेता बना दो।

देश को लूटूँगा, मौज करूँगा।।

कंगाल होगा भारत फिर भी ऐश करूँगा।

भूखों मरेंगे लोग बेकारी बढ़ेगी।।

फिर भी मैं मौज मस्ती से शिकारी बनूँगा।

चाहे बढ़े जातिवाद, चाहे बढ़े आतंकवाद।।

फिर भी हम बनेंगे देश के सरताज।

हे ईश्वर तू हमें नेता बना दो।।

चुनाव में ढेर सारी गाड़ियाँ दौड़ाऊँगा।,

गुडों को आगे पीछे से लगाऊँगा।।

हे ईश्वर तू हमें नेता बना दो।

जीत कर जब मैं संसद में जाऊँगा।।

देश को बेचने की मैं शपथ खाऊँगा।

हे ईश्वर तू हमें नेता बना दो।।



''ग़ज़ल''

राजीव सिंह ''राही''

सदियों से मेरा प्यारा हिन्दुस्तान वही है।
राम वही है मेरा रहमान वही है।।

कुछ हमने ही अपनी सोच बदल डाली है वरना।
गीता भी वही है और कुरान वही है।।

ऐ मुल्क की आबरू से खेलने वालों।
अर्जुन भी वही है और अभी वान वही है।।

रह–रह के डराता है क्यों हमको ऐ साहिल।
कश्ती भी वही है और तूफान वही है।।

क्यों खौफज़दा है आदमी इस दौर का ''राही''।
वरना वही दुनिया है और इंसान वही है।।



''ग़ज़ल''

''सग़ीर अहमद सिद्दीक़ी''

बतला कि क्या ख़ता थी, ऐ गर्दिशे ज़माना।
जो रख दिया जला कर, ये मेरा आशियाना।।

दिल में ये आरज़ू थी, हम फूल बन के खिलते।
रास आया बाग़बाँ को, कब मेरा मुस्कुराना।।

आदम की आल सब हैं, जितने भी आदमी हैं।
तारीख़ के वरक़ से, हमने यही है जाना।।

भाई का क़त्ल भाई, क्यों आज कर रहा है।
किस धर्म में रवा है इन्साँ का खूँ बहाना।।

कहते थे लोग जिसको, 'सोने की एक चिड़िया।
वो जुल्म और तशद्दुद का बन गया ठिकाना।।

है चाँद पर पहुँचने, का आज वक़्त आया।
ओछी समझ में फंस कर, ही देखो रह न जाना।।

गर 'नाम' का बदलना, है अस्ल तरक़्क़ी का।
तो नाम 'आदमी' भी, बदलो ये है पुराना।।

आओ, कि मुल्क का कुछ, माहौल यूँ बनाएँ।
हसरत भरी नज़र से, देखे हमें ज़माना।।

कहना है दोस्तों से, बस ऐ 'सग़ीर' इतना।
दिल में सजा के रखना, ये अम्न का तराना।।



"वो बचपन की यादें"

"अजय वर्मा"

वो बचपन की यादें,
वो खाना–खजाना,
यादों में है अब,
वो गुज़रा जमाना,
वो गर्मी की रातों का,
छत पर गुज़रना,
चाँद को देखें जब,
दिल होता था दीवाना,
वो तितली से मन का,
इधर–उधर उड़ना,
वो स्कूल की थकन को,
क्रिकेट से मिटाना,
शाम ढले फिर घर में आना,
माँ के हाथों के,
गरमागर्म पराँठे खाना,
यादों में है अब,
वो गुजरा ज़माना,

बारिस के पानी में,
कागज की नावें बहाना,
खेल–खेल में ही,
सारी दुनिया को अपना बनाना,
वो गुड़ियों की शादी,
दिवाली की तराजू,
दशहरे की चौकी,
वो गाड़ी की छुक–छुक,
छोटी–छोटी खुशियों का,
बड़ा खजाना,
वो बिन्दास खुशियाँ,
वो निर्दोष चेहरे,
वो प्यारी सी मुस्कान,
चेहरों पे आना,
दबे पाँव दिल में,
घरौंदा बनाना,
न गम़ की जुबाँ थी,
न जख्मों का था पैमाना,
न रोने की वजह थी,
न था हंसने का बहाना,
वो बचपन की यादें,
वो खाना खजाना,
यादों में है अब,
वो गुज़रा ज़माना।।



"कहाँ गये वो दिन ?"

"राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल"

रिटायर होने के बीस बरस बाद,
राम लखन मिश्रा आज अपने ऑफिस में आए।
पके बाल, पिचके गाल, लटकी खाल लेकर।
झुकी हुई कमर से रास्ता नापते हुए।
कोई तो मिल जाए नमस्कार कहने वाला?
कोई तो कहे मिश्रा जी, बहुत दिन बाद दिखाई दिये।
ये बूढ़ी आँखें तलाश रही थीं–
किसी अपने को?

राम लखन भाई सिर्फ यह बताने आये हैं–
मैं अभी जिन्दा हूँ, मेरी पेंशन जारी रखी जाये।
बस मेरा केवल इतना ही काम है इस दफ्तर में?
जहाँ मैनें अपनी जिन्दगी के पैंतीस साल दिये।
जब मैं यहाँ आया तब मेरी शादी कहाँ हुई थी?
मैं तो कुवाँरा ही था।
हर तीसरे दिन एक वर देखा आता था मुझे देखने।

बनारस वाले पांड़े जी, कानपुर के पुन्नू भाई,
करछना के छैल बिहारी, बस्ती के तीरथ राम,
जौनपुर के पुनीत ओझा।
सभी तो हंसते थे, सभी तो मजा लेते थे।
फिर यादव की दुकान पर रसगुल्ला,
और पूड़ी चटनी चाभते थे सब।

कहाँ गये वो दिन?
कहाँ चले गये सारे के सारे लोग?
कोई तो नहीं दिखाई दे रहा है।
कोई तो बढ़कर मुझे गले लगा ले।
आज अपने ही घर में,
न कोई मेरा है और न मैं किसी का हूँ।

मेरी कुशल क्षेम, मेरा हाल चाल,
कोई नहीं है पूछने वाला।
ये पत्थर की इमारतें वही हैं।
पेड़ सारे वहीं हैं।
मगर इमारतों के पीछे और पेड़ों के नीचे,
खड़े होने वाले लोग मुझे नहीं जानते।
फिर कौन मुझे आवाज देगा?
एक चाय के लिए मुझे कौन पूछेगा?

कहाँ गयी मेरी मित्र–मंडली,
जिनके साथ दिल खोलकर चर्चा चली?
चाय की चुस्कियाँ, ढेर सारी मस्तियाँ।
चुहुलबाजी के धमाके, हंसी के ठहाकें,
कहाँ गायब हो गये सब?

जिन्दगी के सफर में जो गुजर जाता है,
वो लौटता कहाँ है?
हर मुलाकात का अंत विछड़ने से ही होता है।
यही इस दुनिया की रस्म है और रवायत भी।
जवानी जा कर आती नहीं।
और बुढ़ापा आ कर जाता नहीं।
हाँ, एक बात तो सच है,
रिश्ते बनते हैं, इसी ऑफिस में आ कर,
और खत्म हो जाते हैं इस ऑफिस से जा कर।



"जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान"

"प्रज्ञा"

जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान
हम हिन्दी का रखें मान।

माँ की लोरी में हिन्दी
प्रेम की भाषा में हिन्दी,
देश के वीर जवानों की
ललकारों में है हिन्दी।।

जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान
हम हिन्दी का रखें मान।

जिस भाषा में वीर क्रान्ति ने
आजादी की अलख जलायी
जिस ज्वाला ने गुलामी की
जंजीरों को पिघलाई
वीर क्रान्तिकारियों की
वो ही भाषा है हिन्दी।।

जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान
हम हिन्दी का रखें मान।

विश्व पटल पर भाषाओं का
सिरमौर इसे ही बनायेंगे
समझे तब भारत को अपने
विश्व गुरू कह पायेंगे।।

जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान
हम हिन्दी का रखें मान।



"संबंधों का अंकगणित"

"स्मृति श्रीवास्तव"

संबंधो के अंकगणित का,
खेल बहुत ही निराला है।
इन्हे निभाने की खातिर,
नित सूत्र बदलने पड़ते हैं।
घटती जातीं सांसे प्रतिपल,
नित नये अनुभव जुड़ते जाते हैं। संबंधों .....
जितने गुना संपत्ति बढ़ती,
संबंधों की घात भी बढ़ती,
ज्यों घटती प्रतिशतता धन की
सम्बन्ध वर्गमूल हो जाते हैं। संबंधों .....
अपने पराये के कोष्ठक में,
हम सब सिमटे बैठे हैं,
तोड़ के छोटे–बड़े कोष्ठक,
संबंध निभाये जाते हैं। संबंधों .....
जोड़–घटाना, गुणा–भाग या,
कोई भी समीकरण लगा लो,
इन सब का अन्त शून्य है,
यह सत्य समझना पड़ता है। संबंधों .....

दिनांक 01.07.2018 से 31.12.2018 के मध्य कार्यालय में नवनियुक्त कर्मचारियों की सूची।

क्रमांक	नाम सर्वश्री	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	नियुक्ति तिथि
1.	शुभम यादव	लेखाकार	ई/6104	16.07.2018
2.	जलन्धर कुमार	लेखाकार	ई/6105	20.08.2018
3.	अंकुर गहल्याण	डी0ई0ओ0	के/5592	03.07.2018
4	संजय राय	डी0ई0ओ0	के/5593	16.07.2018
5.	नीतीश कुमार	डी0ई0ओ0	के/5594	30.07.2018
6.	संजय कुमार	डी0ई0ओ0	के/5595	31.08.2018
7.	वरूण कुमार यादव	डी0ई0ओ0	के/5596	04.09.2018
8.	कपिल	एम0टी0एस0	जी/3772	03.07.2018
9.	आशीष तिवारी	एम0टी0एस0	जी/3773	03.07.2018
10.	रिंकू कुमार मीना	एम0टी0एस0	जी/3774	04.07.2018
11.	सुधाकर पाण्डेय	एम0टी0एस0	जी/3775	04.07.2018
12.	सत्यम बाबू	एम0टी0एस0	जी/3776	04.07.2018
13.	रामदयाल मीना	एम0टी0एस0	जी/3777	05.07.2018
14.	राजू लाल मीना	एम0टी0एस0	जी/3778	10.07.2018
15.	देवेन्द्र सिंह बसेडा	एम0टी0एस0	जी/3779	10.07.2018
16.	कमलेश मीना	एम0टी0एस0	जी/3780	11.07.2018
17.	अमित सिंह	एम0टी0एस0	जी/3781	16.07.2018
18.	शैलेश कुमार	एम0टी0एस0	जी/3782	17.07.2018
19.	प्रवीर शर्मा	एम0टी0एस0	जी/3783	29.08.2018
20.	श्रीमती पूनम	एम0टी0एस0	जी/3784	12.12.2018
21.	श्रीमती नाज़िया कदीर	एम0टी0एस0	जी/3785	12.12.2018

दिनांक 01.07.2018 से 31.12.2018 के मध्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–प्रथम, से सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची।

क्रमांक	नाम सर्वश्री/सुश्री	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	अनूप कुमार टण्डन	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/1349	31.07.2018
2.	सोहन लाल	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2200	31.07.2018
3.	राम शरण	वरिष्ठ लेखाकार	डी/3638	31.07.2018
4	विनोद कुमार पाण्डेय	वरिष्ठ लेखाकार	डी/1772	30.09.2018
5.	प्रेम चन्द्र साहू	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/1350	30.11.2018
6.	बिमला देवी	कैन्टीन अटैन्डेण्ट	एच/24	31.12.2018
7.	कमलेश कुमार	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/606	31.12.2018

दिनांक 01.07.2018 से 31.12.2018 के मध्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय, से सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची।

क्रमांक	नाम सर्वश्री/सुश्री	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	राम आसरे यादव	वरिष्ठ लेखाकार	डी/3422	31.07.2018
2.	मृदुला श्रीवास्तव	लेखाधिकारी	ए/1299	31.07.2018
3.	जान उमर	पर्यवेक्षक	सी/694	31.08.2018
4	फूल चन्द्र गुप्ता	पर्यवेक्षक	सी/592	31.08.2018
5.	देवेन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	डी/1397	30.09.2018
6.	सुरेश चन्द्र जोशी	लेखाधिकारी	ए/1271	30.09.2018
7.	राम औतार प्रसाद	सहायक लेखाधिकारी	बी/1322	30.10.2018
8.	सुधीर पुरूषोत्तम बेहरे	वरिष्ठ लेखाकार	डी/1398	30.11.2018
10.	ज्ञान चन्द्र	वरिष्ठ लेखाकार	डी/1262	31.12.2018
11.	चन्द्रिका प्रसाद	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2447	31.12.2018
12.	गिरिजा सिंह यादव	सहायक लेखाधिकारी	बी/671	31.12.2018

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

क्रमांक	नाम सर्वश्री	पदनाम एवं व्यक्तिगत संख्या	मृत्यु का दिनांक	कार्यालय का नाम
1.	रमेश चन्द्र	वरिष्ठ लेखाकार, डी/1417	08.07.2018	लेखा–द्वितीय
2.	प्रभात कुमार मिश्रा	रिकार्ड कीपर, एफ/3240	28.07.2018	लेखा–द्वितीय
3.	ओम प्रकाश	वरिष्ठ लेखाकार, डी/2066	05.09.2018	लेखा–प्रथम
4	एस0एन0 त्रिपाठी	सहायक लेखाधिकारी, बी/2015	16.11.2018	लेखा–प्रथम
5.	दिनेश कुमार	एम0टी0एस0, जी/3478	20.11.2018	लेखा– प्रथम
6.	शंकरन पाण्डेय	एम0टी0एस0, जी/3315	22.11.2018	लेखा–द्वितीय
7.	अरूण कुमार कनौजिया	वरिष्ठ लेखाकार, डी/2968	26.11.2018	लेखा–द्वितीय
8.	सुनील भटनागर	वरिष्ठ लेखाकार, डी/1383	02.12.2018	लेखा–द्वितीय
09.	राधे श्याम श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखाकार, डी/3534	29.12.2018	लेखा–द्वितीय लखनऊ कार्यालय

रचनाकारों के परिचय

क्र०सं०	रचनाकार का नाम	पदनाम/व्यक्तिगत संख्या	कार्यालय
1.	राजेन्द्र कुमार खरे	उप-महालेखाकार	लेखा-प्रथम
2.	थंकाचन एम०डी०	लेखाधिकारी, ए/1429	लेखा-प्रथम
3.	यश मालवीय	लिपिक, एफ/1745	लेखा-प्रथम
4.	सतीश रॉय	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2551	लेखा-प्रथम
5.	राजेंद्र प्रसाद शुक्ल	वरिष्ठ लेखाकार,डी/1848	लेखा-प्रथम
6.	प्रत्यूष अवस्थी	कनिष्ठ अनुवादक/जे/5005	लेखा-प्रथम
7.	भूपेन्द्र सिंह नेगी	सहायक लेखाधिकारी,बी/2289	लेखा-प्रथम
8.	शशांक त्रिवेदी	एम०टी०एस० जी/3769	लेखा-प्रथम
9.	रवीन्द्र कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2856	लेखा-प्रथम
10.	अजय वर्मा	वरिष्ठ लेखाकार, डी/1921	लेखा-प्रथम
11.	अनूप कुमार टण्डन	वरिष्ठ लेखाधिकारी	सेवानिवृत्त
12.	सगीर अहमद सिद्दीकी	लेखाधिकारी	सेवानिवृत्त
13.	देवमणि मिश्र	वरिष्ठ लेखाधिकारी, ए/228	लेखा-द्वितीय
14.	पी०पी० शर्मा	लेखाधिकारी, ए/1401	लेखा-द्वितीय
15.	राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखाधिकारी,बी/1877	लेखा-द्वितीय
16.	विकास जायसवाल	सहायक लेखाधिकारी,बी/2069	लेखा-द्वितीय
17.	स्मृति श्रीवास्तव	सहायक लेखाधिकारी,बी/6001	लेखा-द्वितीय
18.	राजीव सिंह “राही”	वरिष्ठ लेखाकार, डी/1652	लेखा-द्वितीय
19.	प्रज्ञा	कनिष्ठ अनुवादक,जे०/5006	लेखा-द्वितीय
20.	प्रीति सिंह	लेखाकार,ई/6036	लेखा-द्वितीय
21.	कल्याण सिंह	डी०ई०ओ०,के/5558	लेखा-द्वितीय

"लेखासंगम" दशम अंक का विमोचन करते अधिकारीगण





लोक हितार्थ सत्यनिष्ठा

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय

उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

मुद्रक द्वारा: राजेश कार्पोरेशन, इलाहाबाद - 9415284506